सर्वेक्षण परिवार

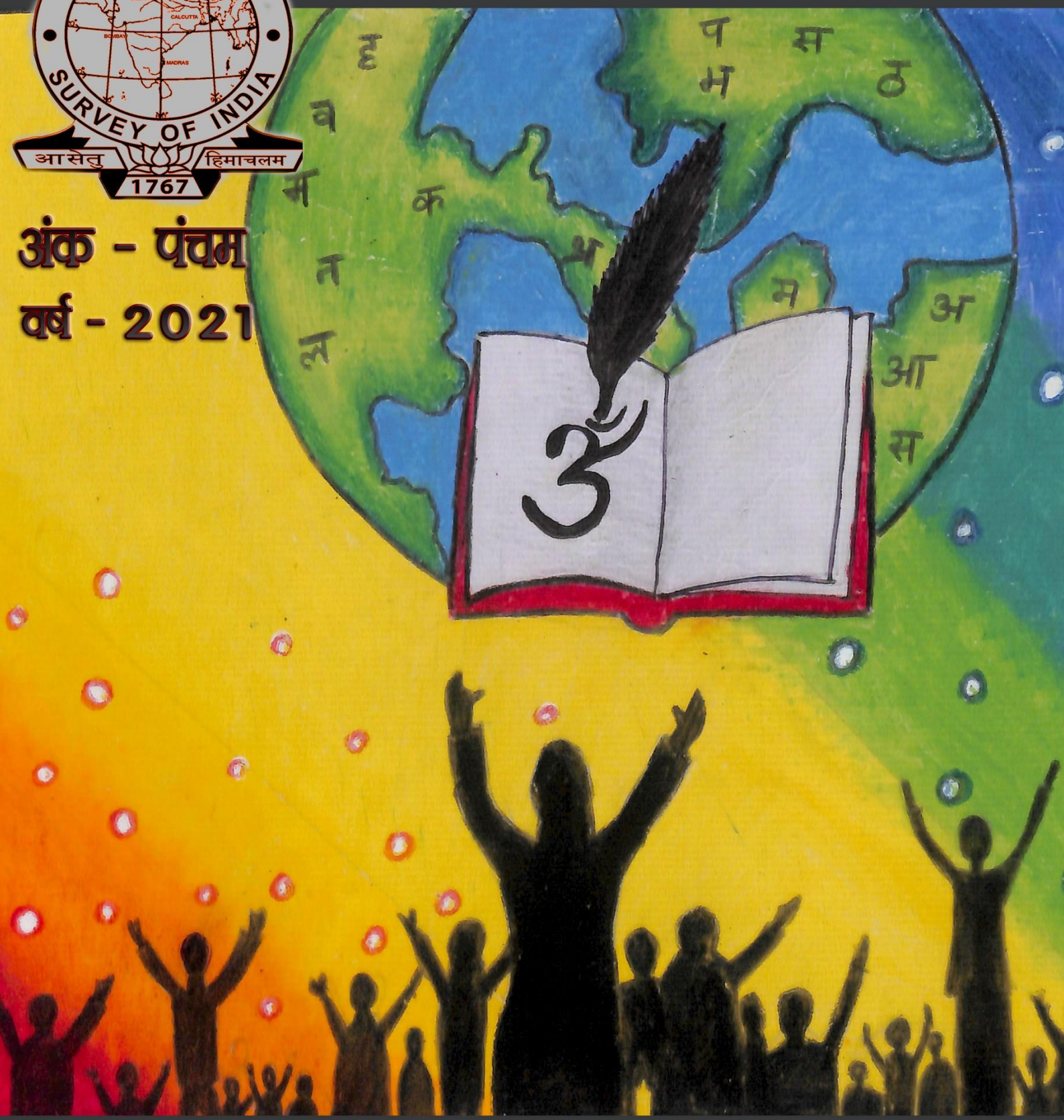

अंक - पंचम

वर्ष - 2021

आवरण पृष्ठ छायांकन
सुश्री संजुती दास, सुपुत्री: श्री प्रलय कुमार दास

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

সর্বেক্ষন পরিবার

સર્વેક્ષણ પરિવાર

ಸರ್ವೇಕ್ಷನ್ ಪರಿವಾರ

സരേഷ പരിവാർ

सर्व्हेक्षण परीवार

ସର୍ଭେକ୍ଷଣ ପରିବାର

ਸਰਵੇਕ੍ਸ਼ਨ ਪਰਿਵਾਰ

सर्वेक्षण् परिवारम्

سارپيڪسهان پارڳصار

சர்வேக்ஷன் பரிவார்

సర్వేక్షన్ పరివార్

سروکشن پریوار

Sarvekshan Pariwar

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

यह पत्रिका विभागीय वेबसाईट www.surveyofindia.gov.in पर उपलब्ध है।

सर्वेक्षण परिवार

अंक – पंचम

वर्ष – 2021

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ
254 बसंत के पार हुआ
भारत का पठारी प्रदेश या फिर हो हिमालय पहाड़
गंगा का मैदान या फिर विशाल मरुभूमि थार
तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे
हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे
विविधताओं से भरा हमारा देश
सर्वेक्षण कार्य आसां नहीं 'शुभेश'
फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण
भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण
राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा 'सर्वेक्षण परिवार'
पत्रिका का पंचम अंक प्रस्तुत है आपको साभार

अंक – पंचम

वर्ष – 2021

सर्वेक्षण परिवार

संरक्षक

कर्नल रजत शर्मा

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

प्रधान संपादक

स्वर्णिमा बाजपेयी

अधीक्षक सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

संपादन

श्री राजेन्द्र शर्मा

सर्वेक्षण सहायक, पूर्वी क्षेत्र कार्यालय, कोलकाता

श्री शुभेश कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

साज-सज्जा व कम्प्यूटर सहयोग

श्री शुभेश कुमार

प्रवर श्रेणी लिपिक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

आवरण पृष्ठ छायांकन

सुश्री संजुती दास, सुपुत्री श्री प्रलय कुमार दास

सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

विषय – सूची

क्रम	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	तिमिर घिरा घनघोर	श्री शुभेश कुमार	10
2	खुद का अस्तित्व	श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी	11
3	आंसू	श्री शुभेश कुमार	12
4	सब अपने हैं	श्री अविनाश सिंह	13
5	मानव का दम्भ	श्री शुभेश कुमार	14
6	घोड़े की खरीदारी	श्री बिश्वनाथ नाग	15
7	राष्ट्रभाषा हिन्दी और इस की यथार्थता	श्री किंशुक बरन राउत	16
8	आह्वान	श्री किंशुक बरन राउत	17
9	मानदेय (हॉनोरेरियम)	श्री शुभेश कुमार	18
10	गुरु और शिष्य की रोमांचक कहानी	श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी	19
11	सुख – दु:ख	श्री शुभेश कुमार	21
12	इंटरब्यू	श्री देबाशीष दास	23
13	स्वप्नभंग	श्रीमती तृषा बनर्जी	26
14	मेरे सपनों का घर	सुश्री अवंतिका मैत्रा	26
15	भारतीय नारी और पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव	श्री शुभेश कुमार	27
16	कहानी	सुश्री अनामिका मैत्रा	29
17	पापा के सपनों की गुडिया	सुश्री शुचि दास	30
18	अकाल बधन (जागरण)	सुश्री अंकिता सामंत	31
19	बीते हुए दिन	श्री सुजीत सरकार	32
20	उलझन	श्री शुभेश कुमार	33
21	मेरी फील्ड के कुछ यादगार किस्से	श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी	34
22	अच्छी आदतों की महत्वता	श्री देबब्रत पालित	35
23	भारत की आशा है हिन्दी	श्री जयराम प्रसाद रवानी	36
24	परफॉर्मेंस रिपोर्ट	श्री शुभेश कुमार	37
25	मैं स्त्री हूं	श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी	38
26	आते हो तुम	श्री शांति दास	39
27	एक नए सबेरे की प्रतीक्षा	श्री अध्ययन सरकार	40
28	हिन्दी	श्री जयराम प्रसाद रवानी	40
29	मेरी यात्रा	श्री शुभेश कुमार	41
30	सुंदरबन में एक सप्ताह	श्री अशोकतरु सामन्त	42
31	कोरोना का डर	श्री दीपांकर दत्ता	45
32	कोरोनावायरस	श्री कृष्ण कुमार शर्मा	47
33	मां	श्रीमती नम्रता मिश्र	48
34	शब्द कल्प जब्द – दादू	श्री स्वपन कुमार सरकार	49
35	नन्हा मेहमान	श्री अभय कुमार मिश्र	50
36	शिरडी यात्रा	श्रीमती शम्पा मुखर्जी	51
37	सोचता हूं	श्री अभिषेक कुमार	51
38	तुलसी की महत्ता	श्री काली प्रसाद मिश्र	52
39	हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा	श्री गौतम आनन्द	53
40	सर्वेक्षण – एक सफर	श्री रतन दे सरकार	55
41	चित्रांकन	श्री अध्ययन सरकार,	
42	चित्रांकन	सुश्री शुचि दास	
43	चित्रांकन	सुश्री अस्मिता मित्रा	
44	चित्रांकन	श्री रेबान्ता मुखर्जी	
45	चित्रांकन	सुश्री स्निग्धा बिश्वास	

सर्वेक्षण परिवार

अंक – पंचम

वर्ष – 2021

पश्चिम बंगाल व सिक्किम

भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

एवं

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

श्री नवीन तोमर
Shri Naveen Tomar

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं. 37
देहरादून-248001(उत्तराखण्ड), भारत

Survey of India
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.-37
Dehradun-248001 (Uttarakhand), India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कोलकाता स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्यालयों द्वारा विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के पंचम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह कोलकाता स्थित कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पण भाव को दर्शाता है।

राजभाषा हिन्दी में कार्य करना और उसका प्रचार-प्रसार न केवल हमारा दायित्व है बल्कि हमारे लिए गौरव की बात है। हिन्दी पूरे भारत को एकसूत्र में बांधने का कार्य करती है। इसलिए राजभाषा की उन्नति हमारे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है।

मैं आशा करता हूं कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता के अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मकता इसी प्रकार उत्तरोत्तर उन्नति करेगी और उससे हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार को बढ़ावा मिलेगा।

पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को 'सर्वेक्षण परिवार' के पंचम अंक के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं।

नवीन तोमर

(नवीन तोमर)
भारत के महासर्वेक्षक

Tel : 00-91-135-2744268/2747051-58 Extn. 4350
Fax : 00-91-135-2744268/2744064
E-mail: sgi.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

ब्रिगेडियर एस. श्रीधर राव
Brig. S. Sridhara Rao

अपर महासर्वेक्षक
Addl. Surveyor General

अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
Office of the Addl. S.G.
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय
Eastern Zone Office
15, वुड स्ट्रीट 15, Wood Street
कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

संदेश

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि कोलकाता स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्यालयों द्वारा विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के पंचम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद भी यहां के अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग से निरंतर पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, यह कोलकाता स्थित कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पण भाव को दर्शाता है। विगत वर्ष कोरोना संक्रमण के कारण उत्पन्न विषम परिस्थिति ने इसमें व्यवधान अवश्य डाला था।

हमें अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। पत्रिका के प्रकाशन से लोगों में हिन्दी में अधिक-से-अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

राजभाषा हिन्दी विभिन्न भारतीय भाषाओं के मध्य संपर्क स्थापित करने का कार्य करती है। इससे भारत की एकता को बल मिलता है। इसलिए राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

मैं पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई एवं ढेरों शुभकामनाएं देता हूं।

एस. श्रीधर राव

(एस. श्रीधर राव) ब्रिगेडियर
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

कर्नल रजत शर्मा
Col Rajat Sharma

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी
Director, WB & Sikkim GDC

निदेशक का कार्यालय
Office of the Director
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी
WB & Sikkim GDC
13, वुड स्ट्रीट 13, Wood Street
कोलकाता-16 Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: wbs.gdc.soi@gov.in

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग कोलकाता की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के पंचम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विगत वर्ष कोरोना संक्रमण की विषम परिस्थिति इसके प्रकाशन की निरंतरता में बाधक बनी थी। परंतु कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के समर्पण एवं राजभाषा हिन्दी प्रेम के कारण इसका प्रकाशन पुन: सफल हो पाया है।

विगत वर्ष के लॉकडाउन के समय में इस महामारी ने पूरे देश में जहां देश के स्वास्थ्य, वित्त, रोजगार, आदि विभिन्न क्षेत्रों को बहुत नुकसान पहुंचाया। वहीं इसके कुछ सकारात्मक परिणाम भी हुए। जैसे कि लोग सपरिवार एक साथ समय व्यतीत कर पाए जो कि पारिवारिक व्यवस्था को मजबूत करने के साथ-साथ लोगों में रचनात्मकता के विकास में भी सहायक सिद्ध हुआ।

हमारी प्यारी हिन्दी देश को एकसूत्र में बांधने का पावन कार्य करती है इसलिए हमें इसके प्रचार-प्रसार पर बल देना चाहिए। हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन इसी ओर उठाया गया कदम है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु इससे जुड़े सभी लेखकों/रचनाकारों और सभी सम्बंधित अधिकारियों / कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवम् इसके उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

रजत शर्मा

(रजत शर्मा) कर्नल
निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

सम्पादकीय

नमस्कार, एक बार पुन: आपके सम्मुख भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता की गृह पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' का नया अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। विगत वर्ष में सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी की त्रासदी से गुजर रहा था। इसने पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता में भी व्यवधान पहुंचाया। अब जबकि धीरे-धीरे इस महामारी पर टीके के प्रहार से विजय पाई जा रही है और जीवन की गाड़ी पुन: पटरी पर लौट रही है, तब इस पत्रिका के पंचम अंक के प्रकाशन पर विचार किया गया। श्रेष्ठजनों से सुना है कि घोर विपदा में भी कुछ अच्छा अवश्य होता है। विगत वर्ष की विषम परिस्थिति में भी अवश्य कुछ-न-कुछ अच्छी बातें हुई हैं। जैसे कि भागदौड़ भरी जिन्दगी में जब परिवार के सदस्यों के लिए समय निकालना मुश्किल था, वैसे में इस त्रासदी ने भय में ही सही, लोगों को एक-दूसरे के समीप लाया। सभी लोग मिलकर एक-दूसरे की स्वास्थ्य की कामना करने लगे। इस विकट समय में एक और अच्छी बात हुई, लोगों की रचनात्मकता उभर कर सामने आई। इसकी झलक आपको इस अंक में भी देखने को मिलेगी।

ईश्वर सभी को स्वस्थ रखें, इसी मंगलकामना के साथ, 'सर्वेक्षण परिवार' का पंचम अंक आप सबके समक्ष रखता हूं। आशा है कि इस अंक की सभी रचनाएं आपको पसंद आएगी। पत्रिका के बारे में आपके विचारों, टिप्पणियों का सहर्ष स्वागत है। आप निम्नलिखित ई-मेल पर अपने सुविचार भेज सकते हैं-

wbs.gdc.soi@gov.in

shubhesh.soi@gov.in

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

तिमिर घिरा घनघोर

तिमिर घिरा घनघोर, ओ मालिक
तिमिर घिरा घनघोर.....
आकुल मन मेरा पंथ निहारै,
कहाँ छुपा तू भोर.....
ओ मालिक... तिमिर घिरा घनघोर।।

अगम अथाहे भटके ये मन,
थाह जीवन की पाए न ये मन,
जाएं कहां कित ओर.....
ओ मालिक.... तिमिर घिरा घनघोर।।

बुद्धि ज्ञान सब क्षीण हो चुके,
माया मोह में लीन हो चुके,
इन्द्री करे बड़ जोर.....
ओ मालिक.... तिमिर घिरा घनघोर।।

भवकूप की अंधियार डराये,
नयन अभागा देख न पाये,
तनिक न कहीं इजोत.....
ओ मालिक.... तिमिर घिरा घनघोर।।

अब तो कृपा करो अंतर्यामी,
सर्व सहायी, समरथ स्वामी,
भव पसरा चहुँ ओर.....
ओ मालिक.... तिमिर घिरा घनघोर।।

हम हैं अधम पतित बड़ भगवन,
तुम्हरे शरण में आयें भगवन,
आस केवल तेरी ओर.....
ओ मालिक.... तिमिर घिरा घनघोर।।

इस भजन को मैंने मूल रूप में मैथिली भाषा में लिखा था। परंतु हिंदी पत्रिका के अनुकूल बनाने हेतु इसमें कुछ परिवर्तन किये गए। इसलिए कुछ शब्दार्थ प्रस्तुत हैं-शुभेश ।

तिमिर = अंधकार, भोर = सुबह, इजोत = प्रकाश, भवकूप = अंधेरा कूँआ

खुद का अस्तित्व

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी, अधीक्षक सर्वेक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हद ना तो आसमां की है, ना जमीं की,
तो क्यों ना बे-हद रहकर जमीं से जुड़ा जाए
और आसमां में उड़ा जाए
जब मन में कुछ करने की ठान ही लिया है,
तो क्यों न हर चुनौतियों से मुस्कुराकर भिड़ा जाए

यूं ही नहीं, बारीकी से खुद को गूढ़ रही हूं ।
काफी कुछ महसूस किया है,
इसलिए, अब खुद का सच मैं ढूंढ रही हूं।।

खिड़की से झाकोगे तो मौसम विपरीत ही मिलेगा
तो क्यों ना निर्भीक होकर, आंधियो में निकला जाए,
फिर बादलों-सा पिघला जाए,
देख लूं खुद का साहस भी,
एक बार अपने ही डर से अंधेरो में मिला जाए,

बड़ा-बड़ा सोचा करती हूं, बड़ी-बड़ी बाते करती हूं,
फिर भी कर्तव्यविमूढ़ रही हूं
स्वपन में सच को देखा था,
इसलिए, सच्चाई में खुद का सच मैं ढूंढ रही हूं।।

दूसरो के रास्तो पे चलोगे, तो ज़िन्दगी तो कट जाएगी, पर सुकून नहीं मिलेगा,
तो क्यों ना अपना जीवन, अपनी राहो पे जिया जाए,
फिर यादगार कुछ किया जाए ।
बस एकबार सब के खातिर,
शिव का विष-प्याला पिया जाए ।।

है सबकुछ तो, मेरे पास मगर
फिर भी मैं परिपूर्ण नहीं हूं
यू अस्तित्व नहीं खोना मुझको
इसलिए, अब खुद का सच मैं ढूंढ रही हूं।।

आंसू

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सुख हुए सपन
उठी दिल में अगन
बढ़ी तन की तपन
बेचैन हुआ जब अंतर्मन
तब सिसक उठे ये दोउ नयन...
तब सिसक उठे ये दोउ नयन...

कोई थाल में छप्पन भोग चखे
कोई पात न सूखी रोटी रखे
दु:ख से भरी कारी बदरी
इस बाढ़-अषाढ़ में आ बरसी
तब अंखियों ने पाथर रुप धरी...
तब अंखियों ने पाथर रुप धरी...

लब देखो फिर भी मौन रहे
मन की व्यथा फिर कौन कहे
स्वपन अधूरे रुष्ट हुए
चुपचाप मौन सब कष्ट सहे
बस नयनों से ही नीर बहे....
बस नयनों से ही नीर बहे...

नियति व्यूह में उलझा मन
बन कर्मयोगी भी हारा तन
नयनों में अब ना कोई सपन
द्वंद्व रहित हुआ अंतरमन
बस सजल हो गए दोउ नयन...
बस सजल हो गए दोउ नयन...

*****

सब अपने हैं

श्री अविनाश सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

जरुरत पड़ी है हर बार,
सबसे पहले मिला है माँ का प्यार, सब अपने हैं।।
जीवन में जब भी जाओ हार,
उठाता है पिता का प्यार, सब अपने हैं।
कमज़ोर पड़ा हूं जीवन में बहुत बार,
काम आया गुरु का प्यार, सब अपने हैं।।

अकेला हुआ हूँ जीवन में बहुत बार,
काम आया बहन का प्यार, सब अपने हैं।
हार के भी मिली है जीत का उपहार,
ऐसा है भाई का प्यार, सब अपने हैं।।

थक के घर लौटा हूँ बहुत बार,
जिसने उठाया वो है बेटी का प्यार, सब अपने हैं।
राहो में थम के चला हूं बहुत बार,
ऐसा है बेटे का प्यार, सब अपने हैं।।

घर से दूर अकेला हुआ हूँ बहुत बार,
काम आया दोस्त का प्यार, सब अपने हैं।
जीवन से सच में गया था हार,
काम आया दुश्मन का प्यार, सब अपने हैं।।

*****

मानव का दम्भ

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

भगवान की सबसे अद्भुत रचना 'मानव'
सरल हृदय, दया भाव से युक्त
कर्मरत, बुद्धि कौशल प्रवीण
कालांतर में हो लोभ मोह अधीन
कर मानवता को ही क्षीण
कपोल कल्पित, स्व सृजित
आडम्बर युक्त विकास की चकाचौंध में
भटककर, वास्तविकता से कोसों दूर
बना ली गगनचुंबी अट्टालिकाएं भूतल पर
भले ही पहुंच गया चंद्र तल पर
मिसाइल, रॉकेट, जहाज, ट्रेन, विमान
जाने क्या क्या बना लिये पाकर विज्ञान
और खुद को ही समझने लगा भगवान
मानवता को ही त्याग, क्या रह सका 'इंसान'?
आज एक सूक्ष्मजीव के डर से
सारे घर में दुबके हुए हैं
कौन विकासशील, कौन विकसित
सभी लॉक डाउन कर डरे हुए हैं
मुझे तो अभी भी दिवा स्वप्न लगता है
सरकारें, महाशक्तियां इतनी असहाय?
वो मानव इतना निःसहाय?
जो भगवान बनने चला था
क्या अब भी मानव दम्भ भरेगा?
स्वयं को सर्वशक्तिमान कहेगा?
तनिक सोचिए शब्दों पर–
'घर के अंदर छुपे रहिये, तभी हम बच सकते हैं'
पूरी दुनिया छुपी है, मानवजाति छुपी है
'शुभेश' तो अपने 'मैं' से छुप रहा है
आप भी छुपिये, कोरोना से नहीं
अपने अंदर भरे दम्भ से, घमण्ड से

कबिरा गर्व न कीजिए, कबहुँ न हँसिये कोय ।
अजय नाव समुद्र में, का जाने का होय ।।

*****

घोड़े की ख़रीदारी

श्री बिश्वनाथ नाग, सहायक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

एक बार की बात है, एक राजा था। वह कुछ सनकी स्वभाव का था। एक बार एक व्यापारी चार घोड़े लेकर उस राजा के दरबार में हाजिर हुआ। उस ने राजा को बताया की उसके चारों घोड़े बेहद नायाब किस्म के है। सभी घोड़े एकदूसरे से बढ़ कर है। ऐसे घोड़े उन्हें कहीं और नहीं मिलेंगे। अतः आप फौरन इन्हें खरीद लें।

राजा बड़ा कंजूस था। उस ने कहा,'मैं केवल एक ही घोड़ा ख़रीदूँगा। तुम चयन कर के बताओ कि इन में मेरे लिए सब से उपयुक्त कौन सा होगा'।

व्यापारी ने कहा,' महाराज, चारों घोड़े सर्वगुणसंपन्न है। इन में से किसी एक को आप के लिए सर्वाधिक उपयुक्त बताना बड़ा कठिन है '।

लेकिन राजा ने गुस्से में कहा, ' मैं कुछ नहीं जानता। मैं तुम्हें एक दिन का समय देता हूँ। तुम्हें कल दरबार में सब से उपयुक्त घोड़े का चयन कर के बताना होगा अन्यथा तुम्हारा सिर कलम कर दिया जाएगा'।

व्यापारी लौट गया। वह अगले दिन दरबार में चारों घोड़े ले कर हाजिर हुआ। उस ने राजा के सामने एक घोड़ा आगे कर दिया और कहा, 'महाराज, यह घोड़ा आप के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है '।

राजा ने पूछा, 'तुम ने कैसे चयन किया कि यही घोड़ा मेरे लिए सब से उपयुक्त है ?'

व्यापारी ने जवाब दिया,'महाराज, मैंने घोड़े का चयन नहीं किया। दरअसल, खुद इस घोड़े ने सर्वाधिक उपयुक्त राजा होने के रूप में आपका चयन किया है'।

राजा ने हैरान हो कर पूछा, ' तुम्हारा क्या मतलब?'

व्यापारी ने कहा,' मैं कल दरबार से लौटने के बाद बड़ा परेशान था। फिर मैंने घोड़ों से सलाह-मशविरा किया। तीन घोड़ों ने कहा,'यह राजा तो बड़ा कंजूस है। यह हमें ठीक से चारा पानी भी नहीं देगा। हमारी खुराक ज्यादा है। हम भूख से मर जाएंगे'।

तब चौथे घोड़े ने कहा , 'मेरी खुराक कम है। मुझे ही उस कंजूस, मक्खीचूस राजा को बेच दो। मैं वहाँ गुज़ारा कर लुंगा '।

इस बात पर सभी दरबारी ठहाका मारने लगे। इस पर राजा बुरी तरह झेंप गया। वह कुछ देर चुप रहा और फिर तैश में आ कर बोला, 'कौन कहता है कि मैं कंजूस, मक्खीचूस हूँ। लाओ, मैं चारों घोड़े खरीदता हूँ'। राजा ने फौरन व्यापारी को चारों घोड़ों के पैसे दिए और चारों घोड़े खरीद लिए। व्यापारी हँसता हुआ दरबार से बाहर निकला। तभी एक राहगीर ने व्यापारी से पूछा,' क्या सचमुच तुम्हारे घोड़े बोलते भी है ?'

व्यापारी ने कहा, 'नहीं, यह तो एक चाल थी '।

राहगीर ने पूछा, 'कैसी चाल?'

व्यापारी ने हँसते हुआ कहा, 'उस कंजूस राजा को चारों घोड़े बेचने कि चाल।'

*****

राष्ट्रभाषा हिन्दी और इस की यथार्थता

श्री किंशुक वरण राउत, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

बहुत सोच विचार के बाद यह तय हुआ था कि हम भारतबासी हिंदी को ही राष्ट्रभाषा मानेंगे। उस समय किसी ने यह नहीं सोचा था कि हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप मे केवल किताबों, मिसिलों और एक संकुचित परिबेश तक सीमित रहेगी। आधुनिक भारत के बहुत सारे अंचलों में एक मिले-जुले भाषा, लिपि और संस्कृति प्रचलित है। करीब 70 प्रतिशत अंचल ऐसी परिस्थिति से गुजर रही है। देवनागरी लिपि और संस्कृत भाषा के शब्द से उभरे इन अंचलों को देखते हुए एक आधुनिक हिन्दी भाषा के बारे मे परिकल्पना किया गया है जो आगे चल कर पूरे भारतवर्ष का आम प्रशासनिक भाषा होगा। आम भाषा चयन करते समय यह ध्यान रखा गया की कम-से-कम जनता प्रभावित हो। हिन्दी को राजभाषा करने के पीछे केवल हमारा स्वाभिमान की सुरक्षा करना ही उद्देश्य नहीं, बल्कि और महान उद्देश्य है जिससे एक देश का अग्रगति और तेज हो जाए। विज्ञान हमारे छात्रों के लिए और वोधगम्य होगा एवं वह नये अवधारणा सृष्टि कर पाएंगे, अगर विज्ञान को हिन्दी मे पुर्णतया पढ़ाया जाएगा। अकसर यह देखा जाता है कि अंग्रेजी व्यवस्था मे पढ़ने वालें विद्या कि सही धारणा नहीं ले पाते हैं और पाठ पढ़ते समय रटकर परीक्षा मे अपनी स्पर्धा दिखाते हैं। अधिकतर स्थानीय भाषा मे शिक्षित लोग सरकारी सेवा का और अच्छा उपयोग कर पाएंगे। एक बड़े समुदाय जो की हिंदी भाषा क्षेत्रों से है, पूरी तरह सरकारी सेवा का लाभ ले सकते हैं और सरकारी कार्य दक्षता मे प्रभृत उन्नति हो सकता है। सभी कार्य एक भारतीय भाषा में होने लगेगा तो बहुत सारे क्षेत्र से और देश से हमारा देश का आभ्यंतर गतिविधियां सुरक्षित रहेगा। सुरक्षा, उत्तम योगा-योग और उन्नत वोधगम्यता ही हमारे देश को नया आयाम दे सकता है। हमारे देश मे हजारों वन फूल ऐसे ही अपने महक का प्रसारण भाषा के गतिरोध की वजह से नहीं कर पाते हैं। हिंदी एक समान्य योगायोग भाषा हो कर उन लोगों को आगामी दिनों मे काफी मौके देगी।

भारत जैसे भाषा बहुल देश में अनेक प्रादेशिक भाषा हिन्दी कि साथ स्पर्धा मे है। बिशेषकर बंगाली और तमिल भाषी अपने भाषा का स्वाभिमान हनन होने की आशंका करते हैं। इस मनोभाव को पाथेय करके कुछ राजनैतिक लोग अपने फायदे के लिए लोगों को उकसाते है। राष्ट्रभाषा का प्रयोग में यह एक प्रमुख गतिरोध है। कुछ प्रदेशों मे लिपि पुर्णतया स्वतंत्र हे जो की देवनागरी लिपि से कुछ भी मिलती नहीं। उन लोगों को आमभाषा के रूप मे हिन्दी को अपनाने मे ज्यादा कठिनाई होगी। भारत के पूर्वोत्तर राज्यों मे कुछ ऐसी भाषा भी है जो रोमन लिपि को अपना चुके हैं। यद्यपि उनकी भाषा जनजातीय हैं , परन्तु विदेशी संस्थाओं के प्रभाब में वह लोग ऐसा कर चुके हैं। दुःख की बात यह है की हमारे तरफ़ से इस दिशा मे सही कदम नहीं लिया गया है। इन सब समस्या को सुलझाने के लिए एक स्वतंत्र व्यवस्था होनी चाहिए। भारत एक गणतांत्रिक और संघीय व्यवस्था मे परिचालित देश है, इसलिए यहाँ नियम बनाने के लिए सबों के मनोभाव को तौलना पड़ता हे । इसी कारण यहाँ हिन्दी को अपनाने के लिए कठोर नियम भी जारी नहीं किया जा सकता ।

भारत का आम प्रशासनिक भाषा अंग्रेजी का स्थान लेने के लिए हिन्दी को आगे तो किया गया है लेकिन जब तक इसे मजबूत नहीं किया जाएगा यह सबमे आद्दत होना कष्टकारी होगा। हिन्दी के व्याकरण को कुछ हद तक लचीला बनाना पड़े तो अपने रुढिवादी अवधारणा को पीछे छोडकर चलना पड़ेगा। दुसरे भाषा मे सृजित अनुवादीय शब्दों को उसके मुल रुप में हिन्दी में ग्रहण करना पड़ेगा । हमें हिन्दी भाषा को गोमुख स्थित गंगा की

तरह रखने से उसकी कलेवर में वृद्धि नहीं होगी। समतल में विभिन्न नदियों से परिपुष्ट गंगा की तरह हिन्दी को और भाषाओं से आए शब्दों से परिपूष्ट करने से उसकी समृद्धि और आदर होगा। हिन्दी के प्रोत्साहन के नाम पर अपना रोजगार जमा कर बैठे रहना और कोई कारगर कदम ना उठाना, ऐसी मानसिकता रखने बाले सरकारी अधिकारी को चिह्नित करके उनके मानसिकता मे परिवर्तन लाने की दिशा में फलप्रद पदक्षेप लेना जरुरी है। संचार माध्यम ने हिन्दी को नये लोगों के पास पहुचाने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। हिन्दी प्रसारण के समय हिन्दी लिपि को लोगों के पास कैसे ज्यादा से ज्यादा पहुँचाया जा सकता है इस दिशा में सोच-बिचार करना आवश्यक है।

*****

आह्वान

श्री किंशुक वरण राउत, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हे भारत देश के लोगों
जरा हिन्दी को तो सीखो
हिन्दी में ही बोलो
हिन्दी मे ही लिखो
इससे है क्या फ़ायदा
पड़ोसी देश चीन को देखो
हिन्दी मे योगायोग
फिर युग बदल देगी
सोने की चिड़िया फिर से उड़ेगी
धरती के सब भाग
चीन जापान स्पेन रशिया
सभी ने अपना भाषा अपनाया
सुरक्षा समृद्धि एकाकार कर
विकसित देश हुआ
अब अपने तरफ तो देखो
हिन्दी मे ही बोलो भाई
हिन्दी मे ही लिखो
हे भारत देश के लोगों
जरा हिन्दी को तो सीखो

*****

मानदेय (हॉनोरेरियम)

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

पूरे वर्ष के सराहनीय कार्य के लिए
मानदेय की घोषणा हुई
कहीं हर्ष में, तो कहीं विषाद में, सिंह गर्जना हुई
ऑथोरिटी ने अपने ही भाइयों को
लड़ाने का पूरा-पूरा इंतजाम किया
इस मानदेय ने जैसे गाय—भैंस की दूध में
नीम्बू का काम किया
उत्सुकता सभी को कि, किस—किस को मिला ये मानदेय
कौन प्यासे रह गये और किसे मिला ये सम्मान पेय
मैं भी खुश मेरा भी नाम लिस्ट में था
पता नहीं ये पुरस्कार कार्य का या दया—दृष्टि का था
खैर पुरस्कार स्वरूप जब 2250 रुपये खाते में आये
सभी प्रफुल्लित पुष्प पल में मुरझाये
पूरे साल के कार्य का सम्मान सिर्फ 2250 रुपये ?
ये हमारा सम्मान है या भीख में मिले रुपये
वर्ष भर में 250 दिन तो कार्य करता हूं
रास्ते में भिखाड़ियों को 10 रुपये जरूर देता हूं
जितने रुपये मिले
उससे अधिक तो भिखाड़ियों को दे डाला
अथॉरिटी ने खींसे निपोरते हुए कहा
इसीलिए तो आपका नाम चुन डाला
ये वही 2500 रुपये हैं
जो टीडीएस काट कर आपको मिले हैं।

यहां तो आपकी मेहनत पर भी टैक्स है
पानी—बिजली यहां तक की रहमत पर भी टैक्स है
'शुभेश' यहां तो सरकारें मिलने वाले भीख पर भी टैक्स लेती हैं
बस नीरव—माल्या जैसों को ऋण दे कर छोड़ देती हैं ।।

गुरु और शिष्य की रोमांचक कहानी

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी, अधीक्षक सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

बहुत समय पहले की बात है, एक गाँव में रामगोबिंद नामक गुरु रहते थे। उनसे दूर-दूर से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। एक बार गोपाल और मदन नाम के दो दोस्त उनसे विद्या ग्रहण करने आये। गोपाल और मदन दोनों एक ही गाँव के रहने वाले थे। गोपाल बहुत सीधा-सादा सा था, पर मदन उतना ही होशियार था। वो दोनो भाई उन गुरु से शिक्षा लेने के लिए गाँव आए। जब उनकी शिक्षा सम्पूर्ण हो गई, तो गुरु ने कहा अब तुम दोनो की शिक्षा खत्म हो गई है और तुम लोग अपने अपने घर जा सकते हो। उसके बाद दोनो दोस्तों ने अपने गुरु को गुरु –दक्षिणा दे के अपनी गांव की ओर चल दिए। चूंकि पहले पैदल ही गांव जाया करते थे, तो दोनो दोस्त पैदल बात करते हुए जा रहे थे। चलते –चलते एक बीच में पड़े गांव में रात हो गई और उनकी नजर गांव के एक पनघट पर पड़ी। उस पनघट के समीप जा कर वो रात में रुकने के उद्देश्य से लोगो से बात करने लगे और अपना परिचय भी दिया । जब लोगो को पता चला कि ये दोस्त पंडिताई सीख के आ रहे है और जैसा कि सबको पता है, गांव में बात फैलते देर नहीं लगती। देखते ही देखते उन दोस्तों के पास अपना हाथ और कुंडली दिखाने के लिए लोगों का जमाव इकट्ठा हो गया । उन दोस्तों का भी टाइमपास होने लगा। लोग तरह – तरह के प्रश्नों को पूछ रहे थे। दोनो दोस्त अपनी शिक्षा का प्रयोग कर के बड़ी ही विनम्रता के साथ उत्तर दे रहे थे। तभी एक बूढ़ी स्त्री अपना मटका लेकर पनघट पर आयी हुई थी। उस स्त्री का बेटा कुछ साल पहले पैसे कमाने के लिए शहर गया था पर लौट के वापस घर नहीं आया था, इसलिए वो स्त्री बहुत ही दुखी एवं परेशान रहती थी। अपने जीवन से निराश रहती थी, उसे देख के लगता था मानो बस वो अपना जीवन जैसे तैसे काट रही है। गांव वालों ने उस स्त्री से भी कहा कि ये बालक पंडिताई सीख के आ रहे है फलां गांव के बड़े ही प्रसिद्ध पंडित से। तुम भी कुछ पूछ सकती हो शायद कोई उपाय बता दे। उस बुढ़िया के मन में भी एक उम्मीद की किरण चमकी और अपनी जल से भरी मटकी लेकर उन बालको के पास गई और बस एक ही प्रश्न पूछा कि मेरा बेटा कब आएगा?? और कहते कहते उसकी मटकी हाथ से छूट गई और टूट कर जमीन पर बिखर गई। ये दृश्य देख गोपाल बोल पड़ा मटकी का टूटना बहुत अपशकुन होता है, तुम्हारा बेटा अब शायद कभी नहीं मिलेगा। पर मदन उस बूढ़ी स्त्री से बोला आप चिंता ना करिए, आपका बेटा बस घर आने ही वाला है।

इसके बाद ये दोनो दोस्त गांव के मुखिया के घर में रात में रुकते है, रात का भोजन वगैरह करते है और सो जाते है । और इधर वो बुढ़िया अपने घर जाती है और अगली सुबह उसका बेटा घर वापस आ जाता है।

अब तो उस स्त्री की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था। इससे पहले वो दोस्त गांव छोड़ के निकल पाते वो स्त्री ये खुशखबरी उन दोस्तों को बताने के लिए जल्दी ही मुखिया के घर आ जाती है और उन्हें अपने यहां दिन के भोजन में आमंत्रण दे देती है और वो दोस्त भी ये न्यौता स्वीकार कर लेते है। उसके बाद दोनो दोस्तों गांव घूमने लगते है, बहुत सारे खेत देखने लगते है और थक के एक इमली के पेड़ के चबूतरे पे बैठ जाते है उस पेड़ पे बहुत सारी कोयले भी बैठी थी। तभी वो आपस में पूछते आज दिन के भोजन में क्या हो सकता है? तो गोपाल बोलता है मुझे लगता है कोई मीठी चीज होगी पर मदन बोलता है नहीं मीठे के साथ कुछ खट्टा भी होगा। और फिर दोनों दोस्त उस स्त्री के यहां दावत पर पहुंचते है। स्त्री भोजन में खीर परोस के लाती है। गोपाल ये देख के बहुत खुश हो जाता है और जैसे ही खीर खाता तो उसे स्वाद में खट्टी लगती है। फिर वो बुढ़िया उन्हें बताती है कि उसने गलती से खीर में दूध की जगह मठ्ठा डाल दिया है। इस घटना के बाद गोपाल बहुत ही दुखी हो जाता है उसे लगता है गुरुजी ने मदन को ज्यादा अच्छे से शिक्षा दी है, मुझे कम सिखाया है और फैसला कर लेता है कि वो दोबारा जा कर उनसे विद्या लेगा। मदन उसको बहुत समझाता है कि ऐसी घटनाएं कभी कभी जीवन में हो जाती है इससे मनुष्य सीखता है और आगे बढ़ता है। परंतु गोपाल उसकी एक नहीं सुनता है। फिर दोनों दोस्त गुरु के पास पहुंच जाते है। गुरु उनको वहा देख आश्चर्य चकित हो जाते है और लौटने का कारण पूछते है। तो गोपाल पूरी घटना सुनाता है और बोलता है गुरु जी आपने मुझे कम शिक्षा प्रदान की है जबकि मदन को ज्यादा अच्छे से पढ़ाया है। मदन ने जिसको जो बताया वो सच हुआ पर मेरा बताया हुआ संदेहमय रहा है। गुरुजी ने मदन से पूछा की तुमने उस स्त्री से ऐसा क्यूं कहां कि तुम्हारा पुत्र आ जायेगा जबकि उसका मटका फूटा था, तो मदन बोला क्योंकि वो मटका पनघट पे फूटा था तो मिट्टी से मिट्टी मिली थी, पानी से पानी मिला था, इसलिए उस स्त्री का बेटा उससे मिलना चाहिए था। गुरुजी ने पूछा फिर दोबारा क्यूं बोला की मीठे में कुछ खट्टा मिलेगा जबकि पेड़ पे बहुत सारी कोयले बैठी थी। तो मदन बोलता है क्योंकि कोयले इमली के पेड़ पर बैठी थी इसीलए मैने ऐसा बोला था। तब गुरुजी को सारी बात समझ आई फिर गोपाल को समझाया कि किताबी ज्ञान काफी नहीं होता है, कभी कभी हमें सामान्य तर्क भी प्रयोग करना पड़ता है तभी किताबी ज्ञान का महत्व समझ आता है।

*****

सुख – दुःख

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

'सुख' इसकी परिभाषा भिन्न–भिन्न हो सकती है। भूखे के लिए भोजन प्राप्ति, दरिद्र के लिए धन प्राप्ति, नि:संतान के लिए संतान प्राप्ति, धूप में खड़े व्यक्ति के लिए छांव की प्राप्ति वहीं ठंढ से ठिठुर रहे व्यक्ति के लिए धूप की प्राप्ति सुख हो सकती है।

अर्थात विभिन्न अवस्थाओं में सुख की परिभाषा अलग–अलग है। तो क्या उपरोक्त वर्णित सुख वास्तविक सुख हैं अर्थात स्थायी हैं। भूखे को यदि भोजन की प्राप्ति हो जाए तो भूख के शांत होने तक ही वह भोजन उसके लिए सुखकारी है। यही स्थिति अन्य के साथ भी है। वास्तविक सुख तो शांति की प्राप्ति है। शांति से परमानंद की प्राप्ति होती है और वही सच्चा सुख हो सकता है।

तो शांति कैसे सम्भव है, इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है। शांति की प्राप्ति में 'संतोष' अत्यंत सहायक होता है। मैं बचपन से ही सदैव प्रार्थना किया करता था–

हे परम पूज्य गुरुदेव जू,
कीजै कृपा रहे शांत मन ।
नहिं चाहिए मुझे और कुछ,
प्रभो दीजिए मुझे 'संतोष' धन ।।

'संतुष्टि के भाव' मन को शांत करते हैं। इसमें भगवत सुमिरन बहुत सहायक होता है। भगवत भजन से अंत:करण शुद्ध होता है और चित्त शांत होता है जो कठिन–से–कठिन परिस्थितियों में भी मन:स्थिति को मजबूती प्रदान करता है और विपरीत समय से उबरने की शक्ति प्रदान करता है।

श्रीरामचरितमानस के सुंदरकाण्ड में श्रीहनुमान जी कहते हैं–

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई ।
जब तव सुमिरन भजन न होई ।।

अर्थात बिपति (दु:ख) की स्थिति वो है जब आपका (प्रभु का) सुमिरन भजन नहीं हो।

संत कबीर साहेब कहते हैं—

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय ।
ज्यों सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे होय ।।

अर्थात, दुःख की अवस्था में भगवान का भजन तो सभी करते हैं, परंतु भगवान जब कृपा करके दुःख दूर कर देते हैं तो फिर उन्हें भूल जाते हैं। यदि सुख के समय में, नियमित रुपेण भगवत सुमिरन की जाए तो दुःख क्यों कर हो।

देखा जाए तो सुख और दुःख दोनों मात्र एक अवस्था है। इसे एक समान भाव से जो लेता है वही परम शांति को प्राप्त कर सकता है। अर्थात जब सुख की प्राप्ति हो तो अभिमान नहीं करना चाहिए और इसे भगवान की कृपा दृष्टि मानकर सहर्ष स्वीकार करनी चाहिए। उसी प्रकार दुःख की स्थिति में भगवान की दी हुई परीक्षा मानकर इसमें सफल होने के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए।

गुरुनानक साहिब कहते हैं—

सुख कउ मांगै सभु को, दुःखु न मांगै कोइ ।
सुखै कइ दुःखु अगला, मनमुखि बूझ न होइ ।
सुख दुःख सम करि जाणी अहि सबदि भेदि सुख होइ ।।

सुख—दुःख से परे होकर भगवत भजन करने से आत्मिक शांति की प्राप्ति होती है और चित्त भगवान के समीप होता है। गुरुनानक साहिब का यह भजन इसको और स्पष्ट करता है—

साधो मन का मान तिआगो ।
काम क्रोध संगत दुरजन की, ताते अहनिस भागो ।।
सुख दुःख दोनों सम करि जानै, और मान अपमाना ।
हरष सोग ते रहे अतीता, तिन जग तत्व पछाना ।।
असतुति, निंदा दोऊ त्यागे, खोजै पद निरबाना ।
जन 'नानक' यह खेल कठिन है, कोऊ गुरमुख जाना ।।

अर्थात सुख—दुःख को समान जानते हुए उसमें बिन विचलित होते हुए जो भगवत सुमिरन करते हैं उन्हें ही परमानंद की प्राप्ति होती है।

******

इंटरव्यू

श्री देबाशीष दास, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

बचपन से लेकर आज तक, राजू को हर बात और काम में अपनी माता पिता के नियमो का पालन करना पड़ता था। इससे वह परेशान हो चुका था।

जैसे, आज सुबह उठते ही माँ ने कहा,

'चलो बिस्तर बिछाओ और चादर फैलाओ।'

पिताजी ने दाँतों में ब्रश करते हुए कहा-

'आप पानी के नल को बंद क्यों नहीं करते?'

जब स्नान समाप्त हो गया, तो उसने पूछा-

'क्या आपने तौलिया को सुखाया या उसे सोफे पर इस तरह छोड़ दिया?'

पैंट शर्ट पहने के बाद दर्पण का सामने कंघी पकड़ते ही फिर कहा,

'क्या साहब को बाल काटने का समय नहीं होता है? क्या आपने कमरे में पंखा बंद कर दिया है या इस तरह से घूम रहे हैं?'

हर दिन सुबह से लेकर शाम तक हर बात में दोनों का किचिर मिचिर, राजू को पसंद नहीं थी। हालाँकि वह कुछ नहीं कह सकता था, फिर भी वह अंदर ही अंदर परेशान रहता था। आज सबेरे उसे नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाना था। तैयार होने के बाद निकलते समय उसने माता-पिता को प्रणाम किया।

माँ ने कहा- 'सही तरह से जाना और सही तरह से वापस आना, और हमको अच्छी खबर सुनाना।'

पिताजी ने कहा- 'क्या आप इंटरव्यू के लिए अच्छी तरह से तैयार किया है? अन्यथा, तुच्छता में लिपटे हुए धन का खर्चा होना है।'

बिना एक शब्द कहे राजू सर झुकाते हुए इंटरव्यू के लिए चला गया।

रास्ते में उसके दिमाग में एक ही बात है -

'अब बहुत हो गया, दिन रात बिना कारण से हर बात में दोनों बुढ़ा बूढी मेरे उपर झाड़ रहे हैं। क्या वह इसके लिए मुझे पैदा किए थे? नहीं अब और नहीं। यदि मुझे नौकरी मिलती है, तो मुझे यहाँ और रहने की आवश्यकता नहीं है। मैं मुम्बई में ही बस जाऊंगा।'

राजू ने इंटरव्यू के लिए निर्धारित स्थान पर पहुंचा। मुख्य द्वार के माध्यम से कार्यालय की इमारत में प्रवेश करने से पहले, उन्होंने अपनी जेब से एक रुमाल निकाल लिया और अपना चेहरा पोंछा और अपने दिल में भगवान से प्रार्थना की।

यह एक विशाल हॉल था, जिसमें बड़ी बड़ी खिड़कियां थी जिससे बाहर से बहुत रोशनी और हवा आ रही थी। कई उम्मीदवार पहले से ही अंदर आ कर बैठ गए थे। राजू ने देखा दो बड़े बड़े एल.ई.डी. बल्ब अनावश्यक रुप से जल रहे हैं, उसे अपने पिता की बात का याद आई। उसने आगे बढ़ कर स्विच ऑफ कर दिया। फिर उसे गद्दे वाले कुर्सीयों के अंदर एक खाली कुर्सी नजर आई। राजू उस कुर्सी पर बैठने जा रहा था, लेकिन कुर्सी पर च्युइंग गम लगा हुआ देखा। शायद इस के कारण उस कुर्सी को छोड़कर दोनों तरफ से दो कुर्सीयों पर दो उम्मीदवार बैठ गए थे। राजू ने अपनी फाइल में लगे एक खाली कागज को

निकाला, और उस परित्यक्त कुर्सी से च्यूइंगगम साफ किया और उस पर बैठ गया। दूसरों ने सब कुछ देखा, और उस पर थोड़ा मुस्कुराया भी।

सही समय पर इंटरव्यू शुरु हुआ। एक-एक करके उम्मीदवारों को बुलाया गया, वे कंपनी के मालिक के कमरे जो ऊपर में था, वहाँ जा रहे थे और एक-एक मिनट में बाहर आ रहे थे। किसी का चेहरा हैरान था, तो किसी का चेहरा गुस्से में था। राजू सब कुछ देख रहा है, लेकिन कुछ भी अनुमान नहीं लगा पा रहा था। पूछने से एक ने कहा कि वह खाली फाइल देख रहे हैं और थैंक्स कहते हुए उसे लौटा रहै हैं ।

राजू को प्यास लगी और वह कुर्सी से उठकर पास के वाटर- कूलर के पास गया। टपकते पानी को देखकर उसे फिर से अपने पिताजी की याद आ गई। उसे रोकने की कोशिश करने पर पानी पूरी तरह से टपकना बन्द हो गया। सोचा कि शायद किसी ने ढीला छोड़ दिया है। फिर उसने पानी पिया, नल को फिर से बंद कर दिया और अपनी जगह पर लौट आया, जहाँ उसने देखा की एक कुर्सी पलट गया था, और उसे ठीक किया।

इस बीच, लगभग हर कोई जो उसके आने से पहले आए थे वापस चले गए थे। केवल दो ही उम्मीदवार बचे हुए थे। उन दोनों की भी वही हालत थी।

तुरंत 'राजकिशोर महापात्र', 'राजकिशोर महापात्र' आह्वान को सुनकर, राजू उठ खड़ा हुआ, उसने जो शर्ट पहन रखी थी, उसे सीधा किया और टाई ऊपर करके, सीढ़ियाँ से उपर वाला कमरे को जाते समय सीढ़ी पर गिरे हुए पलिथीन टुकड़ों को देख के उसको उठाया और कोने में कूड़ेदान में फेंक दिया। फिर उसने धीरे से इंटरव्यू कमरे का दरवाजा धकेलते हुए अंदर गया। इंटरव्यू लेने के लिए अंदर एक ही सज्जन थे।

खुद कंपनी के बॉस ....

'गुड मॉर्निंग सर' बोलते हुए राजू ने अपनी फाइल सौंप दी। सामने बैठे बॉस ने फाइल खोली और तुरंत उसे बंद कर दिया और वापस राजू को सौंप दिया।

बॉस बोले, 'कल, रविवार है, अगले दिन नौकरी ज्वाइन करने में कोई समस्या तो नहीं?'

राजू तुरंत कुछ जवाब नहीं दे पाया। वह क्या जवाब दे समझ नहीं पा रहा था .....! बॉस ने उससे कोई सवाल भी नहीं पूछा, उसने फ़ाइल में सारे प्रमाणपत्र भी अच्छे से नहीं देखा .....और उसे ज्वाइन करने के लिए कह रहे हैं ! फिर इस सोमवार से !

उसने एक बार खुद को चिकोटी काट कर देखा, नहीं ..... ये सपना तो नहीं है।

राजू का चेहरा देखकर कंपनी के बॉस ने पूछा-

'आपको क्या लगता है, मिस्टर महापात्र?' यह एक मजाक नहीं है। आपको काम पर रखा गया है। अगर सोमवार को कोई समस्या है तो आप बता सकते हैं '।

राजू ने धीरे से उत्तर दिया,....

'नहीं सर, कुछ नहीं .... कोई समस्या नहीं है ... पर बिना इंटरव्यू के ऐसे...'

बॉस ने फिर राजू की बात काटते हुए कहा 'किसने कहा कि कोई इंटरव्यू नहीं हुआ है? आपसे पहले हर कोई जो यहाँ आया था सबका इंटरव्यू हो चुका है और आपका भी इंटरव्यू हो गया है।' हालांकि, राजू ने अविश्वासपूर्वक पूछा, 'माफ करना, साहब, मैं अभी-अभी आपके कमरे में आया हुँ। और आप मुझसे बिना किसी प्रश्न के मेरे सभी दस्तावेजों को देखे बिना सीधे नौकरी में ज्वाइन के लिए कह रहे हैं। तो मैंने कब इंटरव्यू दिया! '

बॉस बोले 'हमारे कार्यालय के मुख्य द्वार से लेकर मेरे कमरे में प्रवेश करने तक आप और अन्य हर किसी का इंटरव्यू लिया गया है,' । बॉस ने इतना कहते हुए अपना टेबल पे लगी हुई सी.सी.टी.वी. कैमरा

से जुड़े मॉनिटर को राजू के तरफ घुमाया और अब तक रिकॉर्ड हुए सारे उम्मीदवारों के कार्यकलापों का विडियो दिखाया।

राजू देखता रहा...।

वह मुख्य द्वार में प्रवेश करता है, अपनी जेब से एक रुमाल खींचता है, अपना चेहरा पोंछता है, हॉल में अनावश्यक रुप से जलती हुई बल्ब का स्विच बंद करता है, चबाने वाली गम को साफ करता है, परित्यक्त कुर्सी पर बैठता है, और इसे देख के अन्य उम्मीदवार एक-दूसरे के चेहरे को देखते हुए मुस्कराते हैं। बॉस बोले- 'जब तुमने हॉल में प्रवेश किया तो तुमने जो कुछ भी किया, उससे पहले जो अन्य उम्मीदवार आए थे, वही कर सकते थे।' लेकिन उनमें से किसी ने भी नहीं किया। क्योंकि ये सब, परिवार में माता-पिता और अन्य बुजुर्गों से शिक्षा मिला उसे जीवन में नहीं उतार पाए हैं। आपको अपने घर में वह सुधार संस्कार मिल गया है, और आपने यह सब अपने जीवन में उपयोग किया है। जिसके पास आत्म-अनुशासन नहीं है, वह जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। और हम मानते हैं कि हमारी कंपनी को बेहतर बनाने के लिए जिन गुणों की तलाश थी, वे सभी गुण आपके पास हैं। मैं इसके लिए आपके माता-पिता का सम्मान करता हूं..। बॉस यही बोलते चले.....।

हालाँकि, राजू को कुछ और सुनाई नहीं पड़ रहा था...। उसने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और अपनी आंखों से बहने वाले आंसुओं को पोछ दिया।

बॉस ने कहा.... 'ठीक है ! मिस्टर महापात्र, सोमवार को मिलते हैं। '

'थैंक यू सर, थैंक यू सो मच' राजू ने अपनी फाइल पकड़ते हुए कहा और वापस आ गया।

रास्ते भर वही बातें सोचता रहा ...

सुबह उठने से लेकर रात को बिस्तर पर जाने तक, उसके माता पिता ने उसे हर चीज में परेशान नहीं किया, बल्कि उन्होंने अपने जीवन में अलग-अलग समय पर उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं को हल करने की शिक्षा और संस्कार दिया। और वह शिक्षा और संस्कार केवल माता पिता व बुजुर्गों द्वारा सिखाई जा सकती है, न कि किताब से। आज इंटरव्यू में स्कूल या कॉलेज में सीखे गए किसी पाठ की जरुरत नहीं थी। जिसे वह अपने माता पिता के ताने समझकर परेशान हो रहा था, वही शिक्षा व संस्कार थे, जो सुधार को प्रोत्साहित करते थे। दुनिया में रहने के लिए, सुधार आवश्यक है, और सुधार प्राप्त करने के लिए, अधिनियमों का अनुसरण और अनुपालन आवश्यक है।

जब वह घर पहुंचा, तो राजू ने पहले अपने पिता को गले लगाया और शरीर को जकड़ के पकड़ कर बहुत रोने लगा और रोते हुए अपने आपको धिक्कार करने लगा। उसका रोना सुनकर उसकी माँ रसोई से बाहर निकली और उसके पास बैठ गई। राजू अपना सिर अपने माँ के गोद में रख कर धीरे धीरे रोने लगा। पिताजी ने अपने गंभीर होते हुए पूछा, 'क्या हुआ? तुम तो इंटरव्यू के लिए गए थे, तुमने वहां क्या किया?'

माँ ने भी पूछा कि क्या हुआ।

राजू ने धीरे से माँ की गोद से अपना सिर हटा लिया और कहा, मेरी नौकरी लग गई है। ' माता पिता दोनों खुश हुए ।

आखिरी में राजू बोला 'लेकिन मैं एक शर्त पर नौकरी करने जाउँगा। अगर आप दोनो मेरे साथ मुम्बई में रहेंगे, तो मैं यह नौकरी करुंगा।'

*****

स्वप्नभंग

सपने हकीकत से इतना जुदा हैं, हम कितने उसे देख पाते हैं?
क्या चाहा था और क्या पाया!
वजन का पैमाना आज बड़ा ही एक तरफा है, यदि मन के भाव को नापा जा सकता,
तो बचे रहने की एकतरफा शुन्यता और हाहाकार के बीच में अपने आपको कहीं खो देती हूँ।
मेरी सरलता का फायदा बहुत लोग उठाये हैं, और आज भी उठाते हैं, मैं बहुत ही अकेली हूँ' - कोई मेरे पास
नहीं जिन्हें मैं अपना समझती थी, वे सिर्फ अच्छाई ले गए और बदले में दे गए हैं आघात पे आघात
यह आघात मुझे आज पाषाण बना चूका हैं ---
मर गया हैं मेरा प्यार भरा वो आवेग।
यही तो हैं जीवन – इसे लेकर ही तो चलना होगा ---
इसलिए आज बैठ कर सोचती हूँ ----
यह चिलमन मुझे लेकर जो सपने बुनती हैं वे क्या सच हैं
या हैं रेगिस्तान की मरीचिका स्वरुप !
अँधेरा – बहुत ही अँधेरा – चारो ओर स्तब्ध हैं –
एक अजीब दौर से गुजर रही हूँ –
किसे पता आगे क्या होगा !!

श्रीमती तृषा बनर्जी, मानचित्रकार, डिवि.-I
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

मेरे सपनों का घर

मेरा सपनों का घर कुछ हो ऐसा
प्यारा बिल्कुल मेरे जैसा
छोटा हो लंबाई में बड़ा हो चौडाई में
सोचा मैंने है कुछ ऐसा
खुद से ज्यादा में उसे सजाऊँ
ऐसी ख़ुशी मैं और कहा पाऊँ
घर होगा ऐसा, की मन ना करे कही भी जाने का
जो भी घर पर आए उसे मन करे वहीं घर बसाने का
घर मेरा हो कुछ जन्नत जैसा
मेरा सपनों का घर कुछ हो ऐसा

*****

सुश्री अवंतिका मैत्रा
सुपुत्री श्री बादल मैत्रा, स्थापना एवं लेखाधिकारी

भारतीय नारी और पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव

इस अर्पण में कुछ और नहीं, केवल उत्सर्ग छलकता है।
मैं दे दूँ और न फिर कुछ लूँ, इतना ही सरल झलकता है।।
क्या कहती हो ठहरो नारी, संकल्प अश्रु-जल-से-अपने।
तुम दान कर चुकी पहले ही, जीवन के सोने-से सपने।।
नारी! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

महाकवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध रचना 'कामायनी' की उपरोक्त पंक्तियां नारी की महानता को शब्द रूप देती है। नारी उत्सर्ग एवं समर्पण का दूसरा रूप है। कभी वह अनन्त ममतामयी मां है, तो कभी किलकारी भरती चपल बालिका। कभी वह प्रेम से पूरित प्रेयसी भी बन जाती है और कभी वह फूलों से भी अधिक नाजुक हो जाती है तो कभी वह अपनी और अपनों की सुरक्षा के लिए चण्डी रूप भी धारण कर लेती है। वह सब कार्यों में सक्षम है, और सदैव अपनी मर्यादा में रहने के कारण देवी स्वरूप पूजी जाती है।

मर्यादा में रहकर ही पूज्य बना जा सकता है। जब नदियां गंगा का रूप लेकर तारणहारिणी बनती है तो हम उसे गंगा मैया के रूप में पूजते हैं। परंतु वही नदी जब अपनी मर्यादा तोड़कर कोसी का रूप लेती है तो उसे हम अभिशप्त की संज्ञा देते हैं।

वर्तमान में आधुनिकता के झूठे चकाचौंध में और पाश्चात्य सभ्यता के दुष्प्रभाव ने नारी की स्थिति अमर्यादित कर दी है। पाश्चात्य संस्कृति द्वारा भारतीय नर-नारी में भेदभाव / असमानता के झूठे कथा-किस्से गढ़ कर उनपर पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति को थोपने का कुत्सित प्रयास किया गया है। यदि भारतीय इतिहास का बिना किसी पूर्वाग्रह के सही प्रकार से अध्ययन किया जाए तो इसे स्पष्टता से समझा जा सकता है। गार्गी, मैत्रेयी, भारती इसी भारतवर्ष की नारियां थी जिनमें विलक्षण ज्ञान था और उनकी विद्वता के आगे तत्कालीन शीर्ष विद्वान भी नतमस्तक थे। मीराबाई, रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, रानी चेनम्मा आदि अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं जिन्होंने ज्ञान, भक्ति, संग्राम हर क्षेत्र में अपनी विलक्षण प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। यह इस बात का परिचायक है कि भारतीय समाज कभी भी इस भेदभाव का पक्षधर नहीं रहा है।

परंतु हमें यह बिल्कुल भी नहीं भूलना चाहिए कि भारतीय संस्कृति यूं ही नहीं महान है। इसने अपने सामाजिक संस्कारों से, नैतिक विचारों से सम्पूर्ण विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यहां नर और नारी को सामाजिक जीवन के रथ के दो पहिए के रूप में परिभाषित किया गया है। नारी को जननी के रूप में, संस्कार प्रदान करने वाली प्रथम शिक्षिका के रूप में, सम्पूर्ण गृह के आधार स्तम्भ के रूप में और अन्नपूर्णा का प्रतिरूप माना गया है। जबकि पुरूष को परिवार को बाह्य कारकों से सुरक्षा प्रदान करने की, जीवन संचालन को गति प्रदान करने हेतु आवश्यक मूलभूत आवश्यकताओं यथा – भोजन, वस्त्र, आवास के प्रतिपूर्ति की जिम्मेदारी दी गई। सर्वथा स्पष्ट है कि भारतीय समाज में नारी को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। साथ ही उनको अधिक जिम्मेदारी भी सौंपी गयी है जिसे वह प्रकृति की दी हुई आभूषण यथा- कोमलता, लाज, संकोच, सम्मान, मर्यादाओं से सज कर बड़ी ही कुशलता से निभाती है।

अब इसे केवल इस तर्क पर असमानता अथवा भेदभाव करार देना कि उन्हें पुरूषों के कार्य नहीं करने दिया जाता है, तो यह उनकी अज्ञानता है। बिना भारतीय संस्कृति को समझे उन्हें नारी की श्रेष्ठता समझ में नहीं आ सकती है।

पाश्चात्य सभ्यता द्वारा फैलायी गयी इस ओछे विचारधारा ने वर्तमान युगीन नारी पर गहरा प्रभाव डाला है। वह हर क्षेत्र में पुरूषों की बराबरी करना चाहती हैं। परंतु इसे सिद्ध करने से पहले उन्हें सावित्री और सत्यवान की कथा अथवा मण्डन मिश्र और भारती की कथा का मूल समझना होगा। उन्हें गंगाधर राव और रानी लक्ष्मीबाई का इतिहास खंगालना होगा। उन्हें रानी पद्मावती के जौहर का इतिहास समझना होगा। ऐसे अनेकों उदाहरण भारतीय इतिहास में भरे पड़े हैं। इन सबने दिखलाया है कि जरूरत पड़ने पर नारी वह सभी कार्य कर सकती हैं जो एक पुरूष कर सकता है, कई ने तो उनसे भी बढ़कर उदाहरण प्रस्तुत किया है। इन सबसे स्वतः स्पष्ट है कि भारतीय समाज में नारी का दर्जा पुरूष से भी ऊपर है।

तो आधुनिक नारियां क्यों ये सिद्ध करना चाहती हैं कि वे पुरूष के बराबर है? वे क्यों अपना महत्व कमतर करना चाहती है? पाश्चात्य सभ्यता के कुप्रभाव में आकर वो अपना महत्व कम भी कर रही हैं। पुरूषों की बराबरी के होड़ में वो अपना सबसे बड़ा आभूषण जो प्रकृति प्रदत्त उन्हें प्राप्त था- कोमलता, लाज, संकोच, सम्मान, मर्यादा उन सबों का नाश कर चुकी हैं। भारतीय संस्कृति ने उन्हें सामाजिक संतुलन बनाने हेतु परिवार का आधार-स्तम्भ बनाया था, परंतु वो धराशायी हो चुका है। इसी कारण अब पाश्चात्य सभ्यता की तरह यहां भी परिवार बिखर रहे हैं।

पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण भारतीय संस्कृति को छिन्न-भिन्न कर रहा है। अपनी महान सांस्कृतिक विरासत को बचाना है तो हमें अपने इतिहास से कुछ सीखना होगा। शिक्षा का आधुनिक पैमाना जो वर्तमान में परिभाषित है उसे बदलना होगा। हमें अपनी वैदिक संस्कृति पर गर्व करना होगा। आज इसी वैदिक संस्कृति पर कई देश रिसर्च कर रहे हैं और कई पश्चिमी देश इसका अनुकरण कर रहे हैं। और एक हम लोग हैं जो पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण कर रहे हैं। वे हमारी संस्कृति का अध्ययन कर शाकाहार अपना रहे हैं और हम पिज्जा, बर्गर, चिकन खा रहे हैं। वे हमारी संस्कृति पर अध्ययन कर अपने बच्चों को वेद पढ़ा रहे हैं और हम अपने बच्चों को जन्म लेते ही वन, टू, थ्री पढ़ाना शुरू कर देते हैं। एकम्, द्वि, तृतीय तो दूर की बात है, हम उन्हें एक, दो, तीन पढ़ाने में भी शर्मिन्दगी महसूस करते हैं। हमारी संस्कृति का अनुकरण कर पाश्चात्य नारियां साड़ी पहन रही हैं और हमारे देश में नारी फटी जींस पहन रही है।

ये सब घोर अज्ञानता का परिणाम है। समय रहते इस पर विचार करना आवश्यक है, अन्यथा अगली पीढ़ी के पास अपनी सांस्कृतिक धरोहर पहुंचने से पहले यह विलुप्त हो जाएगी। नारी सदैव सक्षम, सबला रही है और रहेगी उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

तुम्हारे अधरों का रस प्राण, वासना-तट पर, पिया अधीर
अरी ओ माँ, हमने है पिया, तुम्हारे स्तन का उज्ज्वल क्षीर।
पिया शैशव ने रस-पीयूष, पिया यौवन ने मधु-मकरन्द;
तृषा प्राणों की पर, हे देवि, एक पल को न सकी हो मन्द।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की इन्हीं पंक्तियों के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूं और नारी शक्ति को नमन करते हुए जगतजननी जगदम्बे से प्रार्थना करता हूं कि हमारी भारतीय नारी को वो पाश्चात्य संस्कृति के मोह जाल से उबारें।

*****

कहानी

सुश्री अनामिका मैत्रा
सुपुत्री श्री बादल मैत्रा, स्थापना एवं लेखाधिकारी

बंद कमरों के खुले झरोखे में
अगरबत्ती की महक जब हवा को चीरकर अपनी
पहचान बताती है
उसके पीछे एक कहानी है
दीपक जलकर रोशन तो करती है
मगर उसके तले उन अँधेरों में
एक कहानी है
पेड़ अपने अंश को खोकर
वसंत में उन्हें फिर पाने की तमन्ना के पीछे
एक कहानी है
आंधी के बाद
सूरज कि किरणों में
उसके शान और तेज के पीछे
एक कहानी है
कहानी है
यश की, चुनौती की
कष्ट की त्याग की,
अपनों की खोने की,
मिलन की आशा की,
बुरे समय के परिश्रम की,
विकास के महिमा की,
परंतु प्रतीक्षा है उन नजरों की
और चेतन की
जो विचार की गहराई में मग्न होने को सहमत हों

*****

पापा के सपनों की गुड़िया

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री श्री शुभेश कुमार

मैं नन्हीं प्यारी सी बिटिया
पापा के सपनों की गुडिया
मैं मम्मी की राजदुलारी
उनके सपनों की उड़ान मैं
है ख्वाहिश पापा की इतनी
जग में उनकी पहचान बनूं मैं
पढ़ना-लिखना और सीखना
अभी करूं बस काम यही मैं
इनसे ही तय हो सकता है
जग में अपना नाम करूं मैं
अक्षर, गिनती और बोलना
मेरी टीचर सिखलाती है
अच्छा-बुरा काम क्या होता
बड़े प्यार से समझाती है
क्या होता है पी.टी., योगा
खुद करके वो दिखलाती है
डांस, कराटे और संगीत
मैम प्यार से सिखलाती है
'शुचि' प्रभु से करे प्रार्थना
अवगुण हमसे दूर ही रखना
पढ़-लिख कर हमें बनें महान
जग में बढ़ाएं देश की शान।

अकाल बधन (जागरण)

सुश्री अंकिता सामंत
सुपुत्री श्री अशोकतरु सामंत, अधिकारी सर्वेक्षक

दुर्गा पूजा बंगाल में सबसे बड़ा त्यौहार है। यह दुर्गा पूजा न केवल बंगलिओ के लिए बल्कि विभिन्न जाति, पंथ और धर्म के बावजूद विभिन्न भाषाओं के लोगो के लिए एक भावना है। प्रथा के अनुसार बंगाल में यह पर्व आश्विन महीने में मनाया जाता है।इसे शरद ऋतू में मानते है इसलिए इसका दूसरा नाम शरद उत्सव है। छठवें दिन में देवी की पूजा की शुरुआत से देवी की विदाई तक 5 दिन देवी की पूजा होती है।शरद ऋतू में देवी की पूजा का वास्तव में अकाल बधन कहा जाता है। लेकिन हिन्दू पौराणिक कथाओ में इस पूजा को अकाल बधन क्यों कहा जाता है, इसकी कहानी संक्षिप्त में नीचे बताई गयी है।

अकाल बधन का अर्थ 'असमय 'एवं बधन का अर्थ है उद्घाटन या जागरण, यानि असमय पर देवी का जागरण, इसलिए इसका नाम अकाल बधन पड़ा, हिन्दू पौराणिक कथा के अनुसार, श्री राम चंद्र रावण बध करने से पूर्व देवी दुर्गा की कृपा पाने के लिए उनकी पूजा की। आद्यशक्ति महाशक्ति महामाया देवी दुर्गा ने दुर्गम नामक असुर का वध किया और जीवित जगत को दुर्गति से बचाया,जो एक और ब्रह्माण्ड में अजेय और अप्रतिरोध्य है, दूसरी ओर प्रेम के देवता श्री रामचंद्र जी जिनके प्रेम में दया की धारा लगातार बरस रही है, रावण के साथ युद्ध की पूर्व संध्या पर इस सर्वशक्तिमान देवी का आशीर्वाद लेना चाहते थे, लेकिन तिथि नक्षत्र के अनुसार स्वर्ग की देव-देवी की पूजा के लिए समय सूची होती है। पुराणों के अनुसार मर्त्य लोक का छह माह स्वर्ग के देव- देवी के लिए यह एक दिन के बराबर है और शेष छह महीने एक रात के बराबर है।माघ से आषाढ़ तक के समय को उत्तरायण कहा जाता है जो देव देविओ के लिए एक दिन और श्रावण से पौष तक के समय को दक्षिणायन कहा जाता है जो देव देविओ के लिए एक रात्रि है ,इसलिए उस समय पूजा करने के लिए सबसे पहले उन्हें जगाना होता है, यानि उन्हें बधन करना पड़ता है। पुराणों के अनुसार राजा सुरथ ने चैत्र महीना के शुक्ल पक्ष में दुर्गाष्टमी देवी दुर्गा की अर्चना की थी।उसी समय को देवी दुर्गा की पूजा के लिए सूचित किया गया है।चैत्र महीना का समय उत्तरायण है एवं देव देवीगण जागृत रुप में है इसलिए अलग से जागरण एवं बधन करने का जरुरत नहीं होता। लेकिन श्री रामचंद्र ने युद्ध जीतने के लिए आश्विन के महीने में देवी माँ की पूजा करने का फैसला किया और उन्होंने असमय पर देवी को जागृत करके पूजा की थी। इसीलिए , आश्विन के महिने में देवी दुर्गा की इस पूजा का अकालबंधन कहा जाता है।

लंकेश्वर दशानन रावण श्री रामचंद्र का सीता को लंका के अशोक कानन में बंदी बनाकर रखा था ,चारो तरफ कठोर रक्षक थे जिससे सीता माँ का दुखद जीवन बीत रहा था, श्री रामचंद्र भ्राता लक्ष्मण और महावीर हनुमान सहित श्रीलंका पहुंचे ,सीता माँ को छुड़ाने ,लेकिन दीर्घ समय तक चले युद्ध में रावण को पराजित करना असंभव सा हो रहा था।इस बीच रावण का भाई कुम्भकर्ण परेशान हो गया और वह क्रोधित हो गया और श्री रामचंद्र खतरे से चिंतित हो गए। निराश की स्थिति में वह ब्रम्हा के पास गए और अन्य देवी देवताओ ने उन्हें दुर्गविनाशिनी दुर्गा की पूजा करने की सलाह दी ,ब्रम्हा ने कहा इस युद्ध को जीतने के लिए देवी दुर्गा को संतुष्ट करना पड़ेगा, लेकिन शरद ऋतू की पहली लहर यानि दक्षिणायन की पूजा करने के लिए पहले देवी को जगाना होगा, इसलिए सभी देवी देवताओ ने हाथ जोड़कर देवी की स्तुति की और देवी ने प्रकट

होकर निर्देश दिया की छठे तिथि के दिन उसे शुरुआत करनी होगी और सातवे दिन श्री रामचंद्र धनुषबाण में प्रवेश करेंगे ,अष्टमी के दिन राम रावण से युद्ध करेंगे। अष्टमी और नवमी के दिन सन्धिक्षण में रावण का दसों सर अलग होंगे और दशमी को रामचंद्र जीत का जश्न मनाएंगे। सभी नियमो और विनियमों का पालन करते हुए श्री रामचंद्र ने पूजा की व्यवस्था शुरु की। उन्होंने अपने हाथो से देवी दुर्गा की एक सिंहवाहिनी मूर्ति बनाई ,महासमारोह के साथ सप्तमी एवं अष्टमी की पूजा सम्पन्न की ,अष्टमी और नवमी के बीच का समय उन्होंने देवी को प्रसन्न करने के लिए आठ सौ नीलकमल के साथ साथ पूजा करने का फैसला किया ,लेकिन पूजा के दौरान यह देखा गया की एक कमल कम था ,वास्तब में देवी माँ अपने भक्तो का अहिंसा का परिक्षण कर रही थी। बहुत खोज करने पर भी कमल न मिलने पर श्री रामचंद्र को सब 'नीलकमलाक्ष 'कहने लगे। जब वह अपने धनुष और बाण से अपने आँखे अर्पित करने वाले थे ,तो देवी स्वयं रामचंद्र के सामने प्रकट हुई और उन्होंने प्रसन्न किया और उन्हें आशीर्वाद दिया, देवी के आशीर्वाद से ,रामचंद्र ने अंततः युद्ध जीतने सफल हुए और रावण को मार डाला और सीता को बचाया। तभी से श्रीरामचन्द्र की यह पूजा शरद ऋतू की दुर्गतिनाथिनी दुर्गा की पूजा हमारे भारत देश में मनाया जा रहा है।

*****

बीते हुए दिन

फिर बही जिन्दगी हमारी
उम्मीदों की कोई रोशनी, दिखाई नहीं दे रहा है
बस इन्तजार है तेरा
चाहे दस-बीस और पच्चास साल है
क्या फर्क है उसमें, पर
तुम नहीं लौटोगी, मेरे बचपन
सोचा ऊपरवाले से पूछु लूं
कमव्यर्ता वो भी ग्रस्त है, इन वीमारी से
चाहे सभी से पूछ लो
यहां अपना दिल में झांक लो वो
भी बोलेंगे मूर्ख वह कब की बात है
छोड़ के आया तू पीछे से
आकाश को छूने का मन करता था
धरती को चूमने का दिल करता था
झरने के साथ खेल के, पेड़ के नीचे सोने का वह दिन
सच कहूं तो वह दिन बड़े हसीन थे
हे उपरवाले कुछ कर पर लौटा दे वह दिन
चाहे हो ना कुछ ही पल

*****

श्री सुजीत सरकार, सहायक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

उलझन

बड़ी उलझन में है मेरा मन,
तू तो जाने सब कुछ भगवन।
तू तो जाने सब कुछ भगवन।।

ज्ञान बोध से रहित जभी था,
भगवन तेरे निकट तभी था।
बचपन के मन की निर्मलता,
सुंदर सहज भाव शीतलता।।

निश्छल प्रेम बसा था भीतर,
सहज समर्पित सब कुछ तुम पर।
मन में कोई राग न द्वेष,
सहज प्रेम से पूरित भेष।।

बोध भावना आई जब से,
चित्त प्रदूषित हुआ है तब से।
पाप पुण्य की ढेरों उलझन,
कल-बल-छल में भर्मित ये मन।।

कोटि जतन करूँ निर्मल मन की,
आतम-राम के दिव्य मिलन की।
पर, इन्द्री वश से निकलूँ कैसे,
माया मोह तजूं मैं कैसे।।

सदन कसाई की निर्मलता,
पातकता में भी पवित्रता।
पतित पावन हो मेरे स्वामी,
करो कृपा प्रभु अंतर्यामी।।

माया मोह राग औ द्वेष,
काया जनित व्यथा औ क्लेश।
इनके बीच में कृपा विशेष,
मांगे तेरी शरण शुभेश।।

मेरी फील्ड के कुछ यादगार किस्से

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी, अधीक्षक सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

मैने भारतीय सर्वेक्षण विभाग को IISM, हैदराबाद में अप्रैल, २०१६ में अपना कार्यभार ग्रहण किया था, जहां हमारा लगभग १ साल ८ महीने तक प्रशिक्षण चला। उसके बाद हमारे बैच की पोस्टिंग कर दी गई थी। मेरी पोस्टिंग G&RB, देहरादून में हुई थी, वहां मुझे अपने प्रोजेक्ट के तौर पे उच्च शुद्धता तलेक्षण (HPL) के फील्ड का कार्य सौंपा गया। जहां मेरा फील्ड का टीम फाइनल हुआ और जनवरी अंत में हम फील्ड के लिए निकल गए। हमारा लेवलिंग फील्ड का कार्य झांसी से कानपुर वाले मार्ग पे होना था, जहां रास्ते में कई छोटे छोटे गांव , कस्बे आदि भी आते थे। चूंकि सर्वे का कार्य फील्ड में होता है, जो कि राह में चलते लोगो के अंदर जिज्ञासा उत्पन्न करता है। इसी प्रकार जब हम अपना कार्य करते थे, कुछ लोग उत्सुकतापूर्वक तरह तरह के प्रश्न किया करते थे । मेरी भी कोशिश रहती थी कि अपने काम के बारे में लोगो को समझाऊं और इसका महत्व बताऊं। चूंकि हमारे सर्वे का कार्य ज्यादातर तकनीकि से संबंधित है जिसे समझना आम जनता के लिए कभी–कभी थोड़ा मुश्किल भी हो जाता है। इसलिए, कभी कुछ लोगों को समझ आ जाता था, पर कभी कभी कुछ लोगों को समझ नहीं भी आता था। तो इसी से संबंधित अपनी फील्ड के कुछ यादगार पल सांझा करती हूं।

जब हमने झांसी से अपना फील्ड शुरु करके लेवलिंग कर रहे थे और एक स्कूल के पास पहुंच के मशीन से रीडिंग ले रहे थे। उस समय वो स्कूल का लंच का टाइम था। काफी बच्चे वही खेल रहे थे। जब उन्होंने हमे देखा तो वो एक दूसरे से कहने लगे 'देखो शूटिंग हो रही है' और तभी एक बच्चा मेरे पास आके बोला 'आंटी हमारी भी वीडियो बना दो प्लीज' मैने बोला ' आंटी कहोगे तो नहीं बनाऊंगी ' और कुछ ही सेकंड्स बाद सब दीदी दीदी करके मुझे बुलाने लगे। मैने भी तुरंत झूठ–मूठ का उनका वीडियो बनाने का नाटक किया। और वो बच्चे खुश होकर वहा से चले गए।

फिर हमलोग आगे निकल गए। चिरगांव नामक एक गांव पड़ा, उसके आगे एक छोटा सा गांव था उसके पास से हाईवे निकला था। हमलोग हाईवे पे जब levelling कर रहे थे। तो एक आदमी बड़ी ही उत्सुकतापूर्वक पूछता है 'ये सरकार को कौन सा काम चल रहा है'। मैने कहा जमीन की समुद्र तल से ऊंचाई मापते है इससे। ' उसने मेरी बात पर गौर फरमाया और २ मिन. बहुत चिंतन किया फिर बोला 'अभी तो कुछ साल पहले बनी थी रोड और फिर से चौड़ी हो रही है रोड? फिर से हमारे खेत चले जाएंगे'?

मैने भी ५ मिनट तक उसकी बात का चिंतन किया और बोला 'हां, फिर से चौड़ी हो रही है रोड इस बार सरकार १० गुना मुआवजा देगी'

हमलोग levelling करते करते ऐट तक पहुंच गए। वहां भी हम बेंच मार्क ढूंढने के उद्देश्य से गांव के अंदर जा कर schools आदि ढूंढते थे। उस गांव में लोगो के गोबर से लिपाई वाले घर थे। सुबह सुबह जब हम सर्वे कर रहे थे। तभी एक औरत हैंड पंप से पानी भर रही थी। उसने मुझसे पूछा 'बिटिया ये क्या कर रही हो?' मैने कहा 'जमीन का लेवल चेक कर रहे है' । वो बोली 'उससे क्या होगा' । तो मैने कहा 'ये कार्य 'राष्ट्रीय जलविज्ञान परियोजना ' के अंतर्गत हो रहा है। जिससे नदियों के जल के प्रवाह का प्रबंधन किया जाएगा। और जब अच्छे से प्रबंधन हो जायेगा,तो नदियों का अवश्यकता से अधिक जल सूखाग्रस्त

नगरों और गांवो में पहुंचाया जाएगा। वो औरत बड़े ध्यान से मेरी बात सुन रही थी फिर बोली ' अरे अभी तो मैने rs २५००० का पानी का पंप लगवाया है, पहले हमे सरकार की ऐसी योजना के बारे में पता होता कि तो हम नहीं लगवाते, और हमारे पैसे बच जाते।' हम बस थोड़ा सा मुस्कुरा कर अपना काम करते हुए आगे बढ़ गए।

और कुछ दिन बाद मैने अपना फील्ड का कार्य मेहनत और निष्ठा के साथ खत्म किया। मेरा फील्ड का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा और लोगो से बात चीत करते करते फील्ड पता ही नहीं चला कब खत्म हो गया। जब भी अपना फील्ड अनुभव याद करती हू तो होंठो पे मुस्कान आ जाती है।

*****

अच्छी आदतों की महत्वता

श्री देबब्रत पालित, अधीक्षक सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

'जैसे बूंद बूंद से घड़ा भरता है, उसी तरह बुद्धिमान व्यक्ति, थोड़ा–थोड़ा एकत्रित कर के, स्वयं को अच्छाईयों से भर लेता है।' बुद्धा

हम सभी ने बटरफ्लाई इफेक्ट के बारे में तो सुना ही होगा। साधरण शब्दों में कहा जाए, तो एक छोटी सी शुरुवात करने पर ही बड़े से बड़े काम संभव हुए है। यद्यपि इस इफेक्ट को गणित के 'अक्रम सिद्धांत' में प्रयोग किया जाता है। परंतु, इसे हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में भी प्रयोग कर सकते है।

जैसे, बचपन में हमें मंदिर को देखकर प्रार्थना करना सिखाया जाता है। और जब हम बड़े हो जाते है, अगर हमें रास्ते में जाते हुए कोई मंदिर दिखता है तो हम कितने भी अपनी जिंदगी में व्यस्त क्यों न हो, फिर भी हम अपने आप ही कुछ पल के लिए आंख बंद कर के ईश्वर से प्रार्थना कर लेते है। इसी तरह, हम किसी और काम को सोचते हुए जूते पहन सकते है, जूते की फीते बांध सकते है। यहां मैं बस यही समझाना चाहता हूं, कि यदि हमने अच्छी आदतों को व्यवहार में लाते है तो बिना किसी प्रयत्न के हमारे खुद का और समाज का सही ढंग से रुपांतरण हो सकता है।

चलो, इसको एक सच्ची घटना के माध्यम से समझते है। 1990 के दशक के अंत में, करांची विश्व के सबसे घनी आबादी वाले शहरों में से एक और पाकिस्तान का अर्थव्यवस्था केंद्र था। और दूसरी तरफ देखा जाए तो यह विश्व का कम से कम रहने योग्य शहर भी था। कराची में लगभग 60 प्रतिशत से ज्यादा लोग दीन –दरिद्र एवं गंदगी–युक्त बस्ती में रहते थे। इन बस्तियों में रहने वाले लोगों की स्थिति इतनी खराब हो गई थी कि बड़े पैमाने पर संक्रामक बीमारियां फैल गई थी। इस स्वास्थ्य संकट की खबर दुनिया में इतनी ज्यादा फैल गई कि स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के चिकित्सा के प्रवक्ता, स्टीफन लूबी, पाकिस्तान आए और उन्होंने वहां के लोगो को स्वच्छता का महत्व बताया। और उन्हें बार बार साबुन से हाथ धोने की आदत डलवायी। इस मुहिम में स्टीफन के साथ प्रॉक्टर और गैंबल भी शामिल थे। कुछ ही महीनों में, करांची में डायरिया 52 %, न्यूमोनिया 48% और त्वचा संक्रमण 35% तक कम हो गया।

और दूर से सोचने में लगता है, इस तरह का स्वच्छता मुहिम को शुरु करने के लिए लाखों करोड़ों रुपयों की जरूरत पड़ेगी। जबकि, एक साधारण आदत बदलने से सम्पूर्ण स्वास्थ्य में सुधार आने लगा। ये वो आदतें है

जिन्हें हम अगर खुद में विकसित नहीं करते है, तो हम स्वयं से कभी संतुष्ट नहीं रह पाते है तथा अगर किसी संस्था में काम करते है तो वहां अच्छे उत्पादक परिणाम नहीं मिल पाते है।

अच्छी आदतें हमारे जीवन को सही दिशा में ले जाती है। एवं ये आदतें हमारा दुनिया को देखना का नजरिया तथा दुनिया का हमारे प्रति देखने का नजरिये को और बेहतर बनाती है। जब हम सोचते है कि जब जब हमने अपने अंदर कुछ अच्छी आदतें विकसित की है, तब तब हमने अपने अंदर के आलस को छोडा है और समय का सदुपयोग किया है।

अच्छी आदतों का मतलब कोई विचित्र महान काम करना नहीं है, बल्कि सुबह जल्दी उठना, टहलने निकालना, कपड़े प्रेस करना इत्यादि ये सब भी अच्छी आदतें है। अगर थोड़ा और व्यापक रूप से कहे, गिटार सीखना, वित्तीय योजना, परिवार के फंक्शन में शामिल होना, पौधो में पानी देना इत्यादि जैसी आदतें भी स्वयं में विकसित कर सकते है। अगर हम वक्त के साथ अच्छी आदतें विकसित करना शुरू करते है, तो वो धीरे–धीरे हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है, और जीवन में परिवर्तन देखने को मिलता है।

दूसरी तरफ, बुरी आदतें हमें अनुशासनहीन बनाती है, और हम अपनी जीवन को अच्छे से संभाल नहीं पाते है। ऐसी एक बहुत गंदी आदत है अपना वक्त फेसबुक और व्हाट्सएप पर बरबाद करना। यह वक्त हम कुछ अच्छा करने में लगा सकते है। बुरी आदतें हमारी क्षमता वृद्धि के बाधक के रूप में काम करती है। जब हमें ऐसी कुछ बुरी आदतों की आदत लग जाती है तो हम अपने काम से संतुष्ट नहीं रह पाते है।

इसलिए हमें बुरी आदतों को त्याग कर अच्छी आदतों पे ध्यान देना चाहिए। यह कहना सरल है पर करना बहुत कठिन। हमें अपने जीवन की दिनचर्या में खाली बैठने की अपेक्षा सरकारी कार्यालयों में होने वाले समयबद्ध प्रोजेक्ट की तरह उद्देश्य बनाने चाहिए। प्रतिदिन का एक निश्चित नियम बनाना चाहिए, जिसका अनुसरण करना चाहिए। इस तरह की दिनचर्या को निश्चित करने पर हमें भी आत्म संतुष्टि की अनुभूति होती है, जीवन में स्थिरता आती है और हमारे जीवन मे सकरात्मकता का संचार होता है।

अंत में , मैं सभी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वो अपने जीवन की बुरी आदतों एवं अच्छी आदतों पर विचार करें। एक छोटे से कदम के साथ अपनी आदतों को सुधार सकते है। मुझे पूरा विश्वास है, इस दिशा में लिये गये छोटे–छोटे कदम बड़े स्तर पर हमारे जीवन में बदलाव ला सकते है।

*****

भारत की आशा है हिन्दी

जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा है हिन्दी
हिन्दूस्तान की गौरवगाथा है हिन्दी
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी
जिसके बिना जिन्दगी थम जाए
ऐसी जीवन रेखा है हिन्दी
जिसने काल को जीत लिया है
ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी
सरल शब्दों में कहा जाए तो
जीवन की परिभाषा है हिन्दी

श्री जयराम प्रसाद रवानी, एम.टी.एस.
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

परफॉर्मेंस रिपोर्ट

कार्यालय ने पूरे वर्ष का परफॉर्मेंस रिपोर्ट जारी किया।
सभी कर्मियों की कार्यक्षमता का क्या खूब आकलन किया।।
जो अपने कर्तव्यों से भी अधिक सक्रिय रहे।
और जो अपने समर्पण में भी अक्रिय रहे।।
सभी को एक ही तराजू में तौल दिया।
स्वाभाविक है, कुछ अति प्रसन्न,
तो कुछ का खून खौल गया।।
तकनीकी विभाग था,
इसलिए तकनीकी कर्मियों की भरमार थी।
तकनीकी ज्ञान और कार्य के नाम पर सुविधायें बेशुमार थी।।
गैर—तकनीकी वर्ग सदैव की भांति कार्य—भार से दबे थे।
वेतन—भत्ते भी कम, इसलिए बुझे—बुझे से थे।।
परंतु कितने तकनीकी ज्ञान में थे दक्ष?
कुछ तो गैर—तकनीकों के भी नहीं समकक्ष।।
कुछ तो तकनीकी कार्य का वेतन पाते थे।
परंतु, लेखा—सुरक्षा का कार्य ही कर पाते थे।।
इन सबका क्या सुंदर सटीक आकलन,
कार्यालय ने परफॉर्मेंस रिपोर्ट में किया।
तकनीकी कर्मियों के, गैर—तकनीकी उच्च क्षमता को
दिखलाकर उन्हें 'वेरी गुड' रिपोर्ट दिया।।
गैर—तकनीकों को, सलामत मियां के घर छोड़ते,
तो ठीक था।
उन्हें भी ग्रुप डी के कार्यों से तौलते, तो सटीक था।।
सभी को वेरी गुड —वेरी गुड ही दे देते।
टके सेर खाजा—टके सेर भाजी ही तौल देते।।
परंतु गैर—तकनीकों के साथ ही अन्याय हुआ।
समर्पण—भाव किसमें कम था, क्या न्याय हुआ?
पर किसे पड़ी है, कुछ पूछने की।
सब अपने में लड़ रहे, क्या पड़ी है जूझने की।
ना मैं नहीं कहता की कोई मुफ्त की रोटी तोड़े, आराम करे।
जो कर्तव्य है सभी का, समर्पित हो वह काम करे।।
परंतु मन खिन्न तो होता है साहब,
एक यूं टहल के वेतन पाता है।
एक एड़ी रगड़ते रह जाता है।।
आप कुछ तो ध्यान करो।।
'शुभेश' वो दिन होगा सबसे महान।
जब सभी समर्पितों को मिलेगा उचित सम्मान।।

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

"मैं स्त्री हूं"

मैं त्याग भी हूं, मैं राग भी हूं।
सुंदर पौधों का बाग भी हूं।
मेरी बगिया को कुचला तो,
मत भूलो मैं एक आग भी हूं।।

मैं अज्ञान भी हूं, वरदान भी हूं।
अपने घर का अभिमान भी हूं।।
मेरे सम्मान को ध्वस्त किया तो,
शत भवरों का तूफान भी हूं।।

मैं आभा भी हूं, शोभा भी हूं,
सौंदर्य सुसज्जित रम्भा भी हूं,
और आसमान को छूने वाली,
नभ चीर चपल-सी प्रतिभा भी हूं,

मैं स्त्री हूं, मैं नारी हूं,
प्रेम और विश्वास पे हारी हूं,
मेरे विश्वास को नष्ट किया तो,
एक ज्वलनशील चिंगारी हूं।

मैं शक्ति भी हूं, भक्ति भी हूं,
हर जटिल प्रश्न की युक्ति भी हूं,
ऊंची लहरो के सिंधू में,
तट लाने वाली कश्ती भी हूं।।

मैं ममतामय हूं, सहृदय हूं
धूप में शीतल सा आश्रय हूं
मेरे धैर्य का खिलवाड़ किया तो,
घनघोर अमावस का प्रलय हूं।

मैं कोकिल भी हूं, निर्मल भी हूं,
सबकी नजरों से ओझल भी हूं,
जगविदित है मेरी कोमलता,
तो पर्वत के जैसी अटल भी हूं।

मैं वीर भी हूं, मतिधीर भी हूं,
सागर जैसी गम्भीर भी हूं,
लक्ष्य गर मन में ठान लिया,
तो एकलव्य का तीर भी हूं।।

*****

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी, अधीक्षक सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

आते हो तुम

गिरते हुए बारिश की बून्दों में आते हो तुम
भींगते हुए हरियाली में रहते हो तुम
खुली हुई खिड़की से आती भीनी हवा
के साथ आते हो तुम
बारिश के दिन में,
जब सन्नाटा छा जाता, अकेलापन महसूस होने लगता
तब दर्द की लहरों के साथ, दिल में आते हो तुम
बिछुड़ जाने की कहानी की तरह आते हो तुम

कभी-कभी बस में बैठ कर देखता हूं
3-डी पिक्चर जैसा शहर
ऊंची-ऊंची बिल्डिंग, बहती हुई गंगा
ब्रिज पर दोनों तरफ चलता हुआ गाड़ी
कहीं-कहीं रुका हुआ हरियाली
ऊपर नीला आसमान, नीचे गंगा के पानी में
कूदते हुए एक-दो पंछी
गंगा में बहते हुए प्रवाह की तरह आते हो तुम, चुपके से

कभी-कभी फूटपाथ पर देखता हूं
छ: सात बच्चों के लिए खाना बनाती हुई माँ
वहीं आग में उबलते हुए चावल की
सुगन्ध के साथ आते हो तुम

बच्चों की निष्पाप हंसी में देखता हूं तुम्हें
खिलते हुए फूलों में देखता हूं तुम्हें
राजपथ पर जाते हुए रैली में हो तुम
वीर सेनानी द्वारा आतंकवादी को
परास्त करने की शक्ति में आते हो तुम

कलम पे नहीं, कागज पर नहीं, किताब में नहीं
मेरे दिल में प्यार से आते रहो तुम, कविता

आजकल चारों तरफ लाशों का पहाड़
नदी में बहके आता लाश
चूल्हे में जलता रहा लाश
हस्पताल में जमता रहा लाश
कविता कहां गये हो तुम
क्यूं नहीं आते हो तुम

छोड़के मत जाओ, कविता तुम रहो दु:ख में
कोई न पास आता, कविता तुम रहो साथ में
व्यस्त हूं फिर भी, कविता तुम रहो दिन में
चंदा सितारा और, कविता तुम रहो रात में
कागज कलम नहीं, कविता तुम रहो दिल में
सोते हुए भी पास, कविता तुम रहो नींद में
सपनों की तरह, कविता तुम रहो घर में
आओ तैरते रहें साथ, समय के समुन्दर में
*****

श्री शांति दास, सर्वेक्षण सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

एक नए सबेरे की प्रतीक्षा

श्री अध्ययन सरकार, सुपुत्र: श्री सुजीत सरकार

पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

करोना से बचना है तो
साबुन से हाथ धोएं
सामाजिक दुरी रखें
सब मास्क पहन कर बाहर जायें
छींकते समय रुमाल को जरुर इस्तेमाल करें और
दुसरे का ख्याल भी हम जरुर रखें
अगर इन सभी नियमों को अपनाएंगे
तो जरुर करोना हारेगा
और हम सब पहले जैसे ख़ुशी-खुशी में जीएंगे

करोना योद्धा को हम याद रखें
डाक्टर नर्स को सैल्यूट करें
पर याद रखिये बच्चों का भी दान
करोना के चलते जो दो साल के
स्कूल जीवन का किया बलिदान

करोना का जब अंत होगा
दुसरी लड़ाई तब शुरु होगा
धरती को फिर से सजाना होगा
हर जीवन में खुशियाली लाना होगा

*****

हिन्दी

श्री जयराम प्रसाद रवानी, एम.टी.एस.

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

प्रकृति की पहली ध्वनि ऊँ है
मेरी हिन्दी भाषा भी, इसी ऊँ की देन है
देवनागरी लिपि है इसकी, देवों के कलम से जो उपजी
बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, डोगरी, पंजाबी और कई
हिन्दी है इन सब से निकली
प्रकृति की हर इक चीज अपने में संपूर्ण है
मेरी हिन्दी भाषा भी अपने में संपूर्ण है
जो बोलते हैं वही लिखते हैं
मन के भाव सही उभरते हैं
हिन्दी भाषा ही तुम्हें प्रकृति के समीप ले जाएगी
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगी
कुछ हवा चली है ऐसी यहां
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो
बदल सको क्या तुम अपनी माता को
मातृभाषा को फिर क्यों बदल डालो
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो
बदल सको तो तुम अपनी सोच बदल डालो
हर इक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो
हिन्द की जड़ों पर आओ हम गर्व करें
हिन्दी भाषा पर आओ हम गर्व करें।

*****

मेरी यात्रा

पहले मैं सहज था, सरल था
तन मैला सही पर मन निर्मल था
न कोई राग न कोई द्वेष
बस मासूमियत भरा परिवेश
तब इच्छा हुई लिखने की
अपनी सहजता को शब्द रूप गढ़ने की
इस तरह मैं लेखक बना
लिखा, पढ़ा और स्वयं को ही सुना।

फिर पढ़ने की भूख जगी
जो सामान्य भूख-प्यास से भी तीव्र लगी
कई महान कवियों लेखकों को पढ़ लिया
अपने भीतर भी कोई लेखक है छुपा
ऐसा मिथ्याभिमान मन में भर लिया
फिर पाठक जोड़ने की चाह बढ़ी
अब मैं पाठकों के लिए लिखने लगा

कुछ प्रशंसाएं मिली, उलाहनाएं भी मिली
कभी प्रमुदित, कभी आत्ममुग्ध
छोड़कर सहज भाव विशुद्ध
मैंने बस दिखावा भर लिया
सहज अज्ञानता से जटिल ज्ञान की ओर
अपना राह धर लिया
अब मेरी बढ़ गई और प्यास
मेरी भी सुने कोई, बस एक आस
अब मैं श्रोता ढूंढने लगा

मेरी सहजता, जो अब तक हो चुकी विलुप्त
निर्मलता भी मानों पड़ चुकी हो सुप्त
अनेकों छल, कपट, भेद-भाव, ऊंच-नीच
छोटा-बड़ा, अनपढ-विद्वान, अमीर-गरीब
इतन जटिल ज्ञान पाकर बन गया स्वयं महान
अब स्वयं ही करूं अपनी महानता का गुणगान
अपने **मैं** के प्रदर्शन के प्रयास में लगा हूं
हां, अब मैं श्रोता नहीं दर्शक ढूंढने लगा हूं

यही मेरी लेखक से प्रदर्शक बनने की कहानी है
जो समझ सके वो परम ज्ञानी हैं

सहज से असहजता की ओर
सरल से जटिलता की ओर
निष्कपट से कुटिलता की ओर
मेरी जिजीविषा अब बढ़ती ही जा रही है

लोग मुझे भी पढ़ने, सुनने और देखने लगे हैं
कुछ जानने पहचानने भी लगे हैं

पर शुभेश को अब उस लेखक की तलाश है
जो सहज था, सरल था पर, अब नहीं उसके पास है

श्री शुभेश कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सुंदरबन में एक सप्ताह

श्री अशोकतरु सामन्त, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सुंदरी सुंदरबन। विश्व का सबसे बड़ा हेरिटेज मैंग्रोव अरण्य। आदमखोर रॉयल बंगाल टाइगर का आवास। बहुत दिनों से ईच्छा उसे देखने की। अचानक ऑफिस के काम का मौका आ गया। आई सी जेड एम परियोजना का कार्य। बहुत दिनों का ईच्छापुर्ण होगा, इसलिए मन खुशी से नाचने लगा। 12 घंटे जीपीएस ऑब्जर्वेशन। 7-8 कार्य दिवस। प्रोजेक्ट प्लानिंग के दौरान यह समझा गया कि हमें उस कोर एरिया में जाना है जहां आम पर्यटकों को जाने का अधिकार नहीं है। नेतिधोपानी, बागमारा, चमता, बुरी डाबरी वन बीट कार्यालय जाना है। निर्धारित समय पर साल्ट लेक से प्रधान वन संरक्षक और सुंदरवन टाइगर रिजर्व से अनुमति प्राप्त की गई थी। रात भर रुकने वाली चार सिलेंडर वाली नाव को ठीक किया गया। नाविक श्री बसीर मिद्दे। नाव सोनार तरी। हम यानी मैं कार्यालय सहयोगी अरुप दा ग्रुप-डी लालचंद और लक्ष्मण।

एक निश्चित दिन मैं बसंती हाईवे से गोदखली पहुंचा। गोदखली को सुंदरवन का प्रवेश द्वार कहा जाता है। विद्याधारी नदी के किनारे इंतजार कर रही सोनार तरी। हमारा सात दिन का पता। तभी पूर्णिमा से भरी हुई कोटल विद्याधारी नदी के दर्शन ने मन को भयभीत कर दिया। विद्याधारी नदी के पानी में सोनार तरी नाच रही है और हमसे कह रही है - चलो मैं तैयार हूँ।

श्री बशीर मिद्दे एक शिक्षित और अनुभवी नाविक है। 15 वर्षों से सुंदरबन के लिए नावों को ले जा रहा है लेकिन कोर क्षेत्र में दो बार यात्रा कर चुका है। मगूर में ऑयली लुक। मानो शरीर में मांसपेशियां बाहर आना चाहती हैं। हमें 7 दिनों के लिए जंगल में गहरे रहना पडेगा, इसलिए आवश्यक आपूर्ति, पीने का पानी और ताजा पानी नाव तक ले जाया गया। अंडे और चिकन लिए गए। मछली नदी से मिलेगी। नाव के अंदर चार बेड, एक कमोड, बाथरुम, ड्रेसिंग रुम हटेल की तेरा। और डेक में डाइनिंग टेबल और दर्शनीय स्थल चौकी, पोर्टेबल जनरेटर, वॉश बेसिन हैं। सब कुछ बहुत करीने से व्यवस्थित है। हमारी सोनार तरी नाव सुबह दस बजे निकली। यात्रा की शुरुआत गोदखली से विद्याधारी नदी के किनारे हुई। दुर्गादुआनी नहर के किनारे पहला सजनेखली वन कार्यालय। पक्षी प्रेमी, विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों की तलाश में, यहां पक्षी विहार आते हैं।मैंने कार्यालय से आवश्यक मंजूरी और मानव मास्क एकत्र किए। बाघ को धोखा देने के लिए सिर के पिछले हिस्से पर मास्क पहनना पड़ता है। ताकि बाघ को समझ में न आए कि उनका सामना किस तरफ हो रहा है। अपने कार्यालय का काम पूरा करने के बाद, मैं पूर्व में सजनेखली वन्यजीव अभयारण्य और पश्चिम में गोसाबा द्वीप को छोड़कर गोमेर नदी के किनारे आगे बढ़ा। रास्ते में एक साइनबोर्ड देखा गया। लिखा है कि तुम सुंदरवन में प्रवेश कर रहे हो, मन आनंद से मोर की तरह नाच उठा।

पहला गंतव्य नेतिधोपानी है। बेशक, यहां जाने के लिए पर्यटकों की अनुमति है। गोमर नदी आकर विद्याधारी नदी में मिल गई। तो हम कुछ ही देर में विद्याधारी नदी पहुँच गए। चारों तरफ सिर्फ पानी और पानी है और नायलॉन के जालों से घिरे मैंग्रोव वन हैं। ताकि बाघ तैर कर मोहल्ले में न आ सके। इलाका आखिरी, शुरुआती जंगल है। विभिन्न जानवरों, पक्षियों और पौधों के वन, मगरमच्छ, हिरण, सारस, मछली की विभिन्न प्रजातियाँ, साँपों की विभिन्न प्रजातियाँ। सुंदरी, हेताल, गेवा, केओरा पौधा का मेला। हम विद्याधारी नदी के साथ पूर्व में पीरखली आरक्षित वन और पश्चिम में हेरोभंगा आरक्षित वन की ओर बढ़ रहे हैं। मैंने विद्याधारी और मतला नदियों के संगम से एक से दो किलोमीटर उत्तर में नेतिधोपानी नहर में प्रवेश किया। उत्तर में पीरखाली आरक्षित

वन और दक्षिण में नेतिधोपानी आरक्षित वन। नेतिधोपानी नहर से 2 किमी जाने के बाद नेतिधोपानी वन बिट कार्यालय। लोहे और नायलॉन की जाली से घिरा हुआ है। जैसा कि हमें पहले से सूचित किया गया था, नाव को देखते ही मुख्य द्वार खोल दिया गया था। कार्यालय के बिट अधिकारी ने जानकारी दी कि जरा सी लापरवाही से कोई खतरा हो सकता है। जैसे ही हम अंदर पहुंचे तो मेन गेट बंद कर दिया गया। अंदर जाने के बाद, 12 घंटे की जी पी एस ऑब्जर्वेशन की जगह चुनने के लिए वॉच टावर गए। वॉच टावर के साथ एक छोटा कमरा। वॉच टावर से ढलती दोपहर की लाल रंग की चमक ने पूरे आसमान को एक अजीब रंग में रंग दिया है। हम बस हरी-हरी आंखों से जंगल की खूबसूरती का लुत्फ उठा रहे हैं। आवश्यक चिह्नों को चुनने और चिह्नित करने के बाद, शाम 6 बजे जीपीएस उपकरण लॉन्च किया गया। हमारा रसोइया चाय और नाश्ता लेकर पहुंचा। हम बीट ऑफिसर से चाय पर बात कर रहे हैं। सामने की बाड़ के बाहर मीठे पानी का तालाब। सुंदरवन के बाघों को ताजे पानी की आस में रात में तालाब का पानी पीना पड़ता है और यह वाच टावर से देखा जा सकता है। सुंदरवन के बाघ इतने खूंखार हैं क्योंकि उन्हें ताजा पानी नहीं मिलने पर वे समुद्र का खारा पानी पीते हैं। सामने हेतल जंगल। हेतल के पेड़ों की हरी और पीली धारियां ऐसी होती हैं कि अगर वहां कोई बाघ छिपा हो तो समझ में नहीं आता। इसलिए हेतल वन रॉयल बंगाल टाइगर्स का प्राकृतिक आवास है। अजीब अनुकूलन, दूर से समझा नहीं जाता। अचानक एक कार्यकर्ता दिखाई दिया जिसके एक कान नहीं थे और उसका चेहरे का एक बड़ा हिस्सा काट था। पता चला कि पिछले साल वह ताजे पानी में नारियल लेने बाड़ के बाहर गया था।बाहर निकलते ही बाघ ने हमला कर दिया। उनका दससाई चेहारा लेके वही तालाब में वाघसहित गिरने के बाद, बाघ डर के मारे भाग गया और बाद में अन्य कार्यकर्ताओं ने उसे बचाया और स्पीडबोट में गोसाबा से कोलकाता अमरी अस्पताल ले आए और सौभाग्य से 75 टांके लगाने के बाद बच गए। काम के प्रति समर्पित, वह निडर कार्यकर्ता यहां फिर से काम कर रहा है। रात अंधेरी हो रही है। कभी-कभी हिरण की पुकार सुनी जा रही है। पूर्णिमा चारों ओर चांदनी भर रही है। नाव को नेतिधोपानी नहर से बड़ी नदी मतला तक ले जाया जा रहा है क्योंकि इस छोटी चौड़ी नदी में बाघ लाभ कमाकर नाव पर चढ़ सकता है लेकिन बीच नदी में तैरकर बाघ नाव पर नहीं चढ़ सकता। रात में बहुत ही हल्की रोशनी में नाव पर डिनार हो रहा है। पूर्णिमा का प्रकाश और चारों ओर सन्नाटा। कभी-कभी कुछ पशु पक्षियों की आवाज। यहां रात की एक खास खूबसूरती होती है और अगर आप यहां न आएं तो समझ में नहीं आएगा। अचानक मैंने जंगल में दो रोशनी चमकते हुए देखा नाविक ने कहा कि कोई भी जंगली जानवर शायद लकड़बग्घा होगा। नदी के पानी की आवाज़ सुनने, मैं सो गया और अगली सुबह चाय पीके जीपीएस खोलने चला गया। दिन के उजाले में, वॉच टावर से दूर में एक पूरा मंदिर और एक पक्की सड़क देखी। अधिकारी से बात करने पर पता चला कि इतनी सुनसान जगह पर इस मंदिर, स्नान घाट और सड़क का इस्तेमाल कौन करता था यह पता नहीं है। हालाँकि, मानसमंगल में नेतिधोपानी घाट का उल्लेख कुछ हद तक वैसा ही है जैसा कि उल्लेख किया गया है। नाश्ते के बाद हम चमता बीट कार्यालय के लिए रवाना हुए और हम मुख्य क्षेत्र में प्रवेश करेंगे ताकि हमारी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए एक वन रक्षक नाव निकल जाए। हमने नेतिधोपानी नहर के साथ पूर्व की ओर चलना शुरू किया। लगभग 3 किमी चलने के बाद हम गोसाबा नदी पर आए, फिर उत्तर की ओर यू की तरह एक मोड़ के साथ पूर्व की ओर मुड़ गए। मुझे लगभग 6-7 किमी दूर बड़ी चमता नहर मिली। अगल-बगल दो नहरें हैं इसलिए नाविक अक्सर गलत रास्ते पर चले जाते हैं। एक बड़ी चमता नहर और दूसरी छोटी चमता नहर । हम बड़ी चमता नहर से दक्षिण की ओर चलने लगा। यह खाड़ी बहुत संकरी है, ऐसा लगता है कि कई हाथों से जंगल को छू सकते हैं। डर के मारे लोम सीधा हो गया। इसलिए हम चारों तरफ चौकस निगाह रख रहा हैं। खाड़ी अजगर की तरह झुक रही है। इस नहर के पश्चिम में लगभग 8-9 किमी जाने के बाद चमता बीट कार्यालय है। कार्यालय पहुंचकर हम जीपीएस ऑब्जर्वेशन के लिए साइट का चयन किया। दोपहर का भोजन किया गया। जनरेटर चलाकर बैटरी चार्ज की गई। यह कोर एरिया है। अगर मछली पकड़ने वाली नाव गलती से यहां प्रवेश करती है, तो यह दंडनीय अपराध है और नाव को रोक लिया जाता है।जैसे थाने के

सामने एक आरोपी वाहन है, मैंने इहा भी कई नावों को लाइन में खड़ा देखा। हमारा ऑब्जर्वेशन शाम 6 बजे शुरू होगा। हमेरे पास दोपहर का अतिरिकत समय है इसलिए हम जंगल में छोटी गश्ती नाव से जंगल की यात्रा पर गया। नाव की कमान संभालने का अनुभव था। मैंने खूब मस्ती की और शाम को हल्के टिफिन से जीपीएस ऑब्जर्वेशन शुरू किया। हमारी नाव गोसाबा नदी पर रातको रुकी हुई थी। सुबह पांच बजे उठा तो देखा कि पूर्वी आकाश में सूरज उग रहा है और समुद्र के पानी का रंग लाल हो रहा है, यह एक अजीब रोमांचकारी एहसास था। यह दीघा पुरी या दार्जिलिंग का सूर्योदय नहीं है। यह एक अलग तरह की तस्वीर है। लेंस पर कब्जा कर लिया। सुबह छह बजे डाटा डाउनलोड करने के बाद , बागमारा बीट ऑफिस के लिए निकल पड़ा। फॉरेस्ट की नाव आगे बढ़ रही है। सामने भारत और बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय सीमा है। इस क्षेत्र में समुद्री लुटेरों का आतंक है। अक्सर अखबारों में देखा जाता है। यह सुनकर मेरा शरीर डरावना हो गया। हम बड़ी चमता नहर से दक्षिण-पूर्व की ओर चलने लगा। मैंने बड़ी चमता नहर के माध्यम से दक्षिण-पूर्व चलना शुरू किया , बड़ी चमता नहर और दक्षिण चमता नहर के जंक्शन को पार किया और बैकुंठ हाना नदी तक पहुंच गया फिर मैं दक्षिण की ओर चलने लगा। इस क्षेत्र में केओड़ा के पेड़ों की बहुतायत है। बैकुंठ हाना नदी पर दक्षिण की ओर चलकर हम बैकुंठ हाना नदी और चादखालि नदियों के जंक्शन पार कर बाका नदियों के जंक्शन पर पहुँचे। फिर से उस संकरी खाड़ी के नीचे जा रहे हैं। अचानक पूर्वी बागमारा जंगल में एक अजीबोगरीब चमकीला रॉयल बंगाल टाइगर देखा। जिसका हम इंतजार कर रहे थे। लेंस कैप्चर किया गया है। बेहतर देखने की उम्मीद में करीब आने की कोशिश करने के लिए बाघ कड़ी मशक्कत कर रहे थे। अंत में बाघमारा बीट ऑफिस पहुंचा। यह बकाखल और भारकुंडा नहरों के जंक्शन के दक्षिण में है। मैंने हिरण के एक बाड़ा देखा। मुझे पता चला कि अगर बाघ के जंगल में हिरणों की संख्या कम है, तो रॉयल बंगाल प्रजाति को जीवित रखने के लिए यहां के हिरणों को जंगल में छोड़ दिया जाता है। प्रत्येक बीट कार्यालय को खूबसूरती से व्यवस्थित किया गया है। स्टाफ चार-पांच है। खूबसूरत फूलों और तरह-तरह के फलों के पेड़ों से सजाया गया। ईहा का काम खत्म होने पर अगले दिन हम बुरीर डाबरी बीट ऑफिस के लिए निकल पड़े। यह इस चरण का अंतिम अवलोकन है। हम भारकुंडा नहर से होते हुए पूर्व की ओर गया और हरिभंगा नदी में आया। इस नदी के मध्य में भारत-बांग्लादेश सीमा रेखा। नदी के किनारे लगभग 30 किमी सीधे उत्तर की ओर जाने के बाद, मुझे हरिभंगा नदी का जंक्शन मिला, पश्चिम में हरिभंगा नदी को छोड़ कर रायमनगल नदी के साथ उत्तर की ओर चल दिया। यहां एक पर्यटक गमनागमन है।मैंने नाव के गोदी में खड़े पश्चिम बंगाल पर्यटन का नाव देखा। अगली सुबह जीपीएस का काम पूरा हो गया। अब घर लौटने का समय हो गया है। सड़क को छोटा करने के लिए एक छोटी सी नाले से गुजरते समय हमारी नाव चारे की मिट्टी में फंस गई। जहां बाघ का डर होता है वहां शाम होती है। लगभग तीन घंटे तक ज्वार आने तक प्रतीक्षा करें। यह बहुत ही डरावना है, क्योंकि बाघ सामने के जंगल से कभी भी नाव से टकरा सकता है। इसलिए नाव की सूखी लकड़ी में आग लगा दी गई। मैंने देखा कि नदी के उथले पानी में एक जेलिफ़िश फंसी हुई है, हालाँकि, मैंने उच्च ज्वार पर नाव शुरू की और शाम 5 बजे गढ़खली पहुँच गया। कुछ दिनों के लिए पानी से किनारे आकर अच्छा लगा। रात को गढ़खली से कोलकाता कार्यालय होकर घर लौटा। एक सप्ताह के अंत में। हमारे जीवन में कुछ पल ऐसे होते हैं जिनकी यादें लेंस कैप्चि तस्वीरों या वीडियो तक ही सीमित नहीं रह सकतीं। कुछ पल ऐसे भी थे इन दिनों, भले ही मैं काम के सिलसिले में यात्रा कर रहा था, लेकिन यह रोमांचकारी अनुभव मेरे जेहन में हमेशा रहेगा।

*****

कोरोना का डर

श्री दीपांकर दत्ता, अधिकारी सर्वेक्षक
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

इन दिनों शहर में चारों तरफ कोरोना बीमारी के कारण डर का माहौल था। रजत सब्जी खरीदने बाज़ार गया, उसने मास्क पहना हुआ था। उसने देखा कि बाज़ार में हर कोई सोशल डिसटेन्सिंग का पालन करते हुए ख़रीदारी कर रहा है और सब के चहरे मास्क से ढके हुए है।

रजत सब्जी कालू की दुकान से ही खरीदता था। उसने कालू को लिस्ट और थैला देकर कहा कि लिस्ट के अनुसार सारी सब्जियां तौल दे। कालू सब्जियाँ तौल ही रहा था कि तभी रजत को अचानक खांसी आ गई। कालू सब्जियाँ तौलना छोड़कर रजत कि तरफ देखा और पूछा, 'रजत, तुम खांस क्यों रहे हो ? कहीं तुम्हें कोरोना तो नहीं हो गया है ?

' नहीं, नहीं, मैं बिलकुल ठीक हूँ ? मुझे बस यों ही खांसी आ गई ' रजत झेंपते हुआ बोला।

'खांसी ऐसे कैसे आ सकती है। जरूर तुम्हें कोरोना कि शिकायत है, लेकिन तुम उसे छिपा रहे हो। मैं तुम्हें सब्जी नहीं दे सकता। तुम तुरंत अस्पताल जा कर अपनी जांच कराओ,' कालू बोला।

कपिल और श्याम पास की दुकान से सब्जी खरीद रहे थे। दोनों तुरंत वहाँ से दूर हट गए और चिल्लाने लगे – 'भागो रजत को कोरोना हो गया है। अगर हम यहाँ रहे तो हमें भी कोरोना हो जाएगा। कहते हुए वो भागने लगे। देखते ही देखते रजत के खांसी आने कि खबर पूरे बाज़ार में फ़ेल गई और चारों तरफ शोर मच गया। रजत को कुछ समझ नहीं आ रहा था, उसने सभी को समझाने कि कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुआ। ' कहीं मुझे कोरोना तो नहीं हो गया ? रजत ने मन ही मन सोचा और उदास होकर वहीं बैठ कर रोने लगा '।

अध्यापक आशुतोष उस समय बाजार सब्जी खरीदने जा रहे थे। शोरगुल सुनकर वो भी वहाँ पहुंचे और लोगों से माजरा पूछा, तो लोगों ने कहा, की रजत को कोरोना हो गया है और वहाँ रहने से दूसरों को भी कोरोना हो सकता है। उन्होने अध्यापक जी को भी वहाँ से दूर भाग जाने की सलाह दी।

अध्यापक आशुतोष ने सब को शांत करते हुए कहा , ' घबराए नहीं , पहले ये बताए कि आपको किसने बताया की रजत को कोरोना हो गया है' ?

'मैंने अपनी आंखो से रजत को खाँसते हुए देखा है', कालु बोला। पास इकट्ठे हुए लोगों ने भी कालु की बात पर सहमति जताई।

'सिर्फ खाँसने से ही कोरोना नहीं हो जाता 'शक के आधार पर किसी के साथ इस तरह का व्यवहार सही नहीं है'। अध्यापक आशुतोष ने समझाया।

'वो सब हमें नहीं पता। हमें बहुत डर लग रहा है। कहीं हमें भी कोरोना न हो जाए। कालु ने कहा'।

अध्यापक आशुतोष ने सबको ढाढ़स बँधाया , ' डरो नहीं कालु, रजत को कोरोना है या नहीं, यह केवल डाक्टर ही बता सकता है ', चलो, रजत को अस्पताल लेकर चलते है '।

सबने आशुतोष जी की बात मान ली और रजत को लेकर अस्पताल पहुंचे।

अस्पताल में डाक्टर ने सभी की स्क्रीनिंग की और फिर सभी को कुछ दूरी पर लगी कुर्सियों पर बैठने को कहा।

इसके बाद डॉक्टर ने उनसे पूछा, तुम सब इतने घबराए हुए क्यों हो ?

' डॉक्टर, रजत को कोरोना हो गया है'। उसे आप अस्पताल में भर्ती कर लीजिए '। कालु ने कहा।

' तुम्हें कैसे पता चला कि रजत को कोरोना हो गया है '। डॉक्टर ने पूछा ?

' रजत खाँस रहा था , इसलिए हम ने सोचा कि उसे कोरोना ही हुआ है, कालु ने कहा'।

आशुतोष जी ने डॉक्टर को पूरी बात बताई और कहा कि सभी को शक है कि रजत को कोरोना हो गया है और इस वजह से वो खाँस रहा है।

' आपलोगों ने यह बहुत अच्छा काम किया है। मैं अभी इस की जांच करता हूँ , कहकर डॉक्टर उसे जांच के लिए ले गए।

काफी समय तक पूरी जांच और पूछताछ के बाद डॉक्टर बाहर आए और बोले, 'घबराने कि जरूरत नहीं। रजत को कोरोना नहीं है। मैंने उसकी अच्छी तरह से जांच कर ली है '।

' तो फिर वो खाँस क्यों रहा था? मैंने सुना है कि कोरोना कि वजह से खांसी होती है। कपिल ने कहा'।

' सिर्फ खाँसने से किसी को कोरोना नहीं हो जाता। तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ, सिरदर्द, दस्त , स्वाद व गंध का एहसास न होना भी इस बीमारी के लक्षण है। रजत हमेशा मास्क का प्रयोग करता है। वो लगातार अपने

हाथों को सेनिटाइज भी करता रहता है। वो पिछले कुछ दिनों में किसी कोरोना संक्रमित मरीज के संपर्क में भी नहीं आया है। इसलिए उस में कोरोना का कोई लक्षण नहीं है ,' डॉक्टर ने बताया।

' रजत के खाँसने कि वजह क्या थी डॉक्टर' ? श्याम ने जानना चाहा।

' रजत ने गर्मी कि वजह से बाजार जाने से पहले फ्रीज का ठंडा पानी पिया था। उस ने कल रात आइसक्रीम भी खाई थी। इस कारण उसे जुकाम हो गया है। यही उसकी खांसी की वजह थी। यह सामान्य बात है। मैंने दवाई दे दी है '। डॉक्टर ने कहा।

सभी सच्चाई जानकर बहुत शर्मिंदा हुए और उन्होने रजत से माफी मांगी।

' कोरोना से डरे नहीं , बस सजग रहें। यह किसी को भी हो सकता है , लेकिन थोड़ी सी सावधानी हमें इस बीमारी से बचा सकती है। घर से बाहर जाते समय मास्क पहनें, नियमित रूप से हाथ धोएँ , सोशल डिसटेंसिंग

का ख्याल रखें। किसी भी लक्षण का अहसास होने पर नजदीकी अस्पताल में डॉक्टर से संपर्क करें। सब से खास बात यह है कि कोरोना के मरीज से कोई भेदभाव न करें, बल्कि उसकि मदद करने कि कोशिश करें ' डॉक्टर ने कहा।

रजत ने डॉक्टर को धन्यवाद दिया और कहा, ' कोरोना वाइरस के बारे में इतनी जानकारी देने के लिए आपका धन्यवाद। पहले मैं इस से डर गया था, लेकिन अब मुझे डर नहीं लगता '। उसने मदद के लिए अध्यापक आशुतोष को भी धन्यवाद दिया।

*****

कोरोनावायरस

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

कोरोनावायरस सबसे पहले बुहान, चीन में पता लगा था। नोवेल कोरोनावायरस बीमारी को कोविड-19/COVID-19 कहते हैं, इसका अर्थ है : CO कोरोना के लिए, VI वायरस के लिए D डिजिज के लिए है। वर्ष 2019 के दिसम्बर महीने में इसकी शुरुआत बुहान, चीन से हुई थी, इसे कोविड-19/COVID-19 के नाम से भी जाना जाता है। कोरोना महामारी की पहली लहर वर्ष 2020 में आई थी, इस दौरान सम्पूर्ण देश में लॉक- डाउन की स्तिथि आ गयी। शहरों से मजदूर वापस अपने घर पैदल चल कर आने लगे, बहुतों को अपनी जान भी गवानी पड़ी। यह वायरस किसी व्यक्ति के खांसने या छींकने से साँस के कणों/बूंदों के सीधे संपर्क में आने से या वायरस से संक्रमित सतह को छूने से फैलता है। इसके लक्षणों में बुखार, खांसी, जल्दी-जल्दी साँस लेना, अधिक गंभीर मामलों में साँस लेने में तकलीफ होता है इससे जान जाने का भी खतरा रहता है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि कोरोनावायरस का संक्रमण है इसलिए इसमें टेस्ट करवाना जरुरी है, जिससे किसी को कोविड-19/COVID-19 होने पर पता चल सके।

कोविड-19/COVID-19 टेस्ट पोजीटिव आने पर डाक्टर से सलाह लें और औषधि का सेवन करें। इससे बचाव के सामान्य तरीके हैं – मास्क का उपयोग, बार-बार हाथ धोना, निरंतर अपना हाथ साबुन या अल्कोहल आधारित हैण्ड सेनेटाईजर से साफ करना चाहिए। कोरोना महामारी की दूसरी लहर वर्ष 2021 में आई, इसमें कोई ऐसा ही व्यक्ति होगा जिसके किसी रिश्तेदार की मृत्यु नहीं हुई हो। कोरोनावायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, साँस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फ़ैल होना और यहाँ तक कि मौत भी हो सकती है। जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है, उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। अभी इससे बचाव के लिए वैक्सीन भी उपलब्ध हो गयी है, हमारे कार्यालय द्वारा सभी अधिकारिओं/कर्चारियों एवं उनके परिवार के सभी सदस्यों को वैक्सीन दिलवा दी गयी है। कोरोना अभी ख़त्म नहीं हुआ, ऐसे में जरुरी है – नियमित रूप से हाथ धोना, मास्क पहनना, आपस में उचित दुरी बनाए रखना। यदि सम्भव हो सके, तो रोजाना तुलसी के दो पत्ते और एक किवी के फल का सेवन अवश्य करें।

माँ

श्रीमती नम्रता मिश्रा : बहु श्री काली प्रसाद मिश्र
सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)

तुम कितनी सुन्दर हो मईया
वर्णन नहीं मै कर पाती
रूप तेरा मन मोह ले मेरा
जब मैं देखूँ तुमको
तुम हो मेरे जग जीवन में
मैं खुश करती हूं मन में
याद तेरा करती हर पल
रुद्राक्ष की माला संग में
हर- पल रहना साथ मेरे
ऐसे ही तुम मन मंदिर में
जीवन में तुम मेरे रहना
खुशियां सर्वत्र बांटू मैं
भौतिक रूप दर्शन देना
श्वांसों में बसना मेरे
जीवन की तुम ज्योति मेरी
तुम दीपक की बाती हो
चलने की तुम राहे मेरी
मिलने की तुम मकसद हो
आशा हो तुम मेरे मन की
जीवन की तुम खुशियां हो
ऐसे ही तुम हर – पल जग में
भौतिक रूप में तुम बसना
हर इच्छा को पूरा करके
मुझको चरणों में रखना
तेरा नाम इस जग में
शान्ति धरोहर तुम में
स्वासों में तुम हर -पल रमकर
नयनो में तुम मेरी बसना
रूप तेरा अनमोल है जग में
दुर्गा -सरस्वती नाम तेरा

शब्द कल्प जब्द – दादू

श्री स्वपन कुमार सरकार, सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

आज पुरानी बातों को याद करके मन में सिहरन पैदा हो जाते हैं। मेरा गॉव का नाम चरखयरामरी है जो हुगली जिला में गंगा के तट पर स्थित है। कहा जाता है कि इस नदी में खयरा मछली मिलता था, जिस के सहारे गॉव के लोगों अपनी जीविका चलाते थे, इसी कारण इस गॉव का नाम ऐसा पड़ा।

एक दिन हम और चार दोस्त कोलकाता से अपने गॉव देखने के लिए रवाना हुए। हमारा गॉव कोलकाता शहर से 60 किॅलोमीटर दूरी पर है। हम ठंढी के मौसम में करीब 10 बजे सुबह नदी के किॅनारे पहुंच गए। नदी के पास चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी। चारों ओर फैले पीले सरसों के बाग एक मनोरम छटा प्रस्तुत कर रहे थे। यही गॉव की मिट्टी की खुशबू हमें यहां खींच लाती है। मातृभूमि और पितृभूमि की महिमा स्वर्ग भूमि से भी अधिक है।

शाम के करीब चार बजे चारों दोस्त गंगा मॉ के तट पर बैठ प्राकृतिक सुन्दरता का आनन्द ले रहे थे। दूसरी ओर दूर से मांझी तथा नाव के सवारी लोगों का शोर-गुल सुनाई दे रहा था। दूर से समीप आती इस शोरगुल के बीच कुछ गीत के गुनगुनाते बोल स्पष्ट सुनाई देने लगे थे। 'हर हर मॉ गंगे, गंगोत्री नाशिनी गंगे, तुम हो बंगे, तुम हो संगे, तुम हो अंगे, उदासिनि गंगे, सुख-दुख का साथी, ...' । तभी देखता हूं कि हमारे प्रिय शब्द-कल्प-जब्द दादू (शब्दों की जाल में उलझाने वाले दादू) हमारी ओर आ रहे हैं।

- बैठो दादू, कैसे हो, सब कुशल मंगल है न।
- अरे, तपन का भाई स्वपन हो ना – तुम्हारा काम तो स्वप्न देखना है ना। (और वे हंसने लगे) मैं तो अच्छा हूं, लेकिन तुम लोग गॉव में कैसे, क्या गॉव घूमने आए हो।

आज से बहुत दिन पहले दादू सरकारी कर्मचारी थे। नियम के पाबंद, समय पर कार्यालय में उपस्थित हो जाते और कामकाज में व्यस्त हो जाते। किसी पार्टी पॉलिटिक्स में भाग नहीं लेते थे। ईमानदारी पूर्वक काम करने से अधिकारियों के प्रियपात्र बन गए थे। जिसके कारण वे अपने सहकर्मियों के नजर पर चढ़ गए। ईर्ष्या के कारण उनके सहकर्मियों ने चोरी के झूठे इल्जाम में फंसा दिया। वे अपने नौकरी से हाथ धो बैठे। लोगों ने कहा कि अफसर के सामने हाथ जोड़ो और माफी मांग लो। परंतु वे बड़े स्वाभिमानी थे, उन्होंने मुड़कर ऑफिस में कदम नहीं रखा। पत्नी भी छोड़कर चली गई। अब वो अकेले हैं। 'जोदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे', कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर के वाणी को मन में उतार कर वो अपना जीवन जी रहे हैं।

दादू का शब्द कल्प जब्द प्रारंभ हो गया। वो बोलने लगे –

आपके life एवं wife दोनों में if लगा है लेकिन हमारा गॉव का **जीवन** में जीव भी है साथ ही साथ वन भी है। जिस वन में चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। जिससे सदैव स्वास्थ्य अच्छा रहता है। ग्राम में ही तो असली ग्राम (तौल) मिलता है, शहर की तरह यहां लोग धूर्त नहीं हैं। शहर में सहन और हरण करना ही सबका धर्म बन जाता है। वहां लोग अधिक चालाक और चतुर हैं, कोई किसी का विश्वास नहीं करता है। इसलिए वहां कोई सुखी नहीं है। शहर में वातावरण में दूषण के परिमाण में वृद्धि होता रहता है। शिव ने तो हलाहल पीकर स्वयं को अमर कर लिया लेकिन शहर में हमलोग दूषण पीकर मर रहे हैं।

मंत्री का मतलब होता है मन में तीन का जोड़ करने वाला। अर्थात हमेशा तीन तिकरम में रहने वाला। नेता का मतलब – ने (take) ता (matter) इसलिए नेता केवल लेना जानते हैं। तभी दादू मेरे दोस्त से पूछ बैठे-

- तुम्हारा नाम क्या है बेटा, तुम क्या करते हो?
- मेरा नाम हरि दास। मैं भारत सरकार के दफ्तर में काम करता हूं।
- सही नाम सही काम करते हो। तुम सब कुछ हरण कर रहे हो और कह रहे हो कि तुम दास हो।
- क्या अजीब बात कहते हो दादू।
- कितने बजे ऑफिस में जाते हो और कितने बजे ऑफिस से निकलते हो। सच-सच कहना बेटा।
- बहुत आदमी एक घण्टा देर से ऑफिस पहुंचता है और आधा घण्टा पहले ही लौट आता है। परंतु मैं आधा घण्टा पहले पहुंचता हूं और आधा घण्टा बाद निकलता हूं।
- तुमको धन्यवाद। हिसाब लगाना कठिन है, बेटा सोच लो- देश भर में कितने कर्मचारी हैं जो दफ्तर के साथ नाइंसाफी करते हैं और देश के उन्नति के पथ में रुकावट बनते हैं।

दादू फिर अवसाद भरे स्वर में उठते हुए बोले- जैसे पानी से पानी मिलकर पानी बन जाते हैं आओ हमलोग पाणि से पाणि (हाथ से हाथ) मिलाकर एकता लाएं। बच्चों फिर मिलेंगे, अधूरे किस्से को पूरा करेंगे, भालो थाको, शूखे थाको – हरि दिन तो गया, सांझ हुआ पार..... गुनगुनाते हुए वो दूसरी ओर निकल गए। दादू के शब्द जाल में उलझ कर पता ही नहीं चला, कब अन्धेरा हो गया। हम शहर की ओर निकल पड़े, एक अन्धेरे से निकल कर दूसरे अन्धेरे में डूबने के लिए।

*****

नन्हा मेहमान

श्री अभय कुमार मिश्र, सुपुत्र : श्री काली प्रसाद मिश्रा
सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत), *पश्चिम बंगाल व सिक्किम*

घर में आया एक नन्हा मेहमान
भर दी सबको होने पर मुस्कान
नानी बोले की मेरी जान
दादी बोले कि मेरी जान
दादा के लिये ये हीरे समान
बुढ़ी दादी आतुरता से करे इन्तजार
बुआ कहे की ये नन्दलाल समान
पिता कहे मेरे जीवन का आधार
माता कहे की ये चमकेगा सूर्य के समान
जिसके रोने से घर में सभी हो जाते परेशान
जिसके हंसने से सभी हो जाते निहाल
तूतली बोली सुनने को सब परेशान
माँ की गोदी में जाते ही सब समस्या का समाधान
जिसकी किलकारी से होती सुबह शाम
ऐसा है मेरा नन्हा मेहमान

शिरडी यात्रा

श्रीमती शम्पा मुखर्जी, सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सन् 2019 के 23 अगस्त को मैं सपरिवार शिर्डी साईंबाबा के दर्शन हेतु रवाना हुई। लोगों का कहना है कि साईंबाबा के कृपा के बिना बाबा का दर्शन नहीं होता है। 25 अगस्त सुबह 6 बजे हमलोग मनमद स्टेशन पहुंचे। मनमद से बाबा का स्थान करीब 50 किमी दूर है। चारों तरफ पहाड़ों से घिरे रास्तों पर गाड़ी चलने लगा। गाड़ी में सांई बाबा का भजन चल रहा था, जिससे हममें शीघ्र पहुंचकर सांईबाबा के दर्शन की उत्कण्ठा बढ़ती जा रही थी और एक सुखद अनुभूति भी हो रही थी। करीब डेढ घण्टे की यात्रा के बाद मंदिर के निकट महाराष्ट्र पर्यटन अतिथिशाला में हमलोगों ने प्रवेश किया। होटल रूम से बाबा के मन्दिर से आती हुई भजनों का स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहा था। नहाने के बाद हमलोग बाबा के दर्शन हेतु मन्दिर में प्रवेश किये। काफी लोग इकट्ठे हो चुके थे। सभी दोनों हाथों से ताली बजाकर भजन गा रहे थे- 'शिर्डी बाबा पार करेगा / शिर्डी बाबा पार करेगा'। बाबा का संगमरमर की मूर्ति सिंहासन पर आसीन था। सभी भक्त जिस कोने से भी देखता उसे लगता बाबा उसे ही देख रहे हैं। हमलोग धीरे-धीरे बाबा के करीब पहुंचे। मन्दिर के पण्डित ने बाबा का फूल हमलोगों को दिया। धीरे-धीरे हमलोग दर्शन कर बाहर निकल गए।

अगले दिन हमलोग शिर्डी से 65 किमी दूर शणि सिंगरोरे गये। यहां शणि देव की पूजा बड़े धूम-धाम से की जाती है। सारी दूनिया में ऐसी कोई जगह नहीं जहां मकान व घरों में द्वार नहीं होता। लेकिन यहां किसी दूकान या घर में कोई द्वार नहीं है। मैंने यह चीज वहां प्रत्यक्ष देखा। लोगों का कहना है कि स्वयं शणि देव इस क्षेत्र की रक्षा करते हैं। कुछ साल पहले तक इस मन्दिर में महिलाओं का प्रवेश निषेध था। परंतु अब महिलाएं भी यहां दर्शन कर सकती हैं। मन्दिर में पूजा कर हमलोग शिर्डी लौट आए और अगले दिन कलकत्ता के लिए रवाना हो गए।

सोचता हूँ...

श्री अभिषेक कुमार, एम.टी.एस.
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

सोचता हूँ कि क्या कमी रह गई,
शायद कुछ या जितना था वो काफी न था।'
नही समझ पाया तो समझा दिया होता
या जितना समझ पाया वो काफी न था।
शिकायत थी तुम्हारी हमसे कि तुम जताते नही,
प्यार है तो दुनिया को बताते क्यो नही।
सब कुछ लवो से बताना जरूरी तो नही,
आँखो मे प्यार दिखा क्या वो काफी न था।

अरे मुहब्बत की मै क्या नुमाईश करता,
दिल की हर धडकन मे तुम थी क्या वो काफी न था।
सोचता हूँ कि क्या कमी रह गई,
क्या जितना था वो काफी न था।

तुलसी की महत्ता

श्री काली प्रसाद मिश्रा, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

भारतीय संस्कृति में वन और वनस्पति का बहुत ही महत्व है। आदिकाल से ही रोगों के उपचार में पौधे का प्रयोग किया जा रहा है। विश्व में लोग अपने अनुभव के आधार पर जड़ी बूटियों का प्रयोग करते आ रहे हैं। इसी प्रकार तुलसी भी हमारी संस्कृति से जुडी है। वेद पुराण में इसका वर्णन है पूजा, प्रतिष्ठा में तो नित्य ही तुलसी दल की आवश्यकता पड़ती है। धार्मिक मान्यताओं के आधार पर हर घर या आँगन में तुलसी के पेड़ मिल जायेंगे। इससे कई तरह को बीमारी दूर हो जाती है। मान्यता तो ऐसी है की जिस घर में या दरवाजे पर तुलसी का पौधा होता है वहां छोटी मोटी बीमारी फटकती ही नहीं है। यह एक छोटे आकार का पौधा होता है। इसकी पतियों हरी व बैंगनी रंग की होती है। इसके पुष्प (मज्जर) छोटे एवं सुगंधित होते हैं। यह लेमियेसी (lamiaaceae) परिवार का पौधा है। अपने औषधीय गुणों के कारण इसकी विधिवत खेती मध्यप्रदेश, उतरप्रदेश, कर्नाटक में की जा रही है। वैसे तो पूरे भारत में हर घर में पायी जाती है।

तुलसी के प्रकार

1 गम्भीर तुलसी

2 बुवेई तुलसी

3 कपूर तुलसी

4 स्याम तुलसी

5 बुखार तुलसी

तुलसी के औषधीय गुण

सर्दी, जुकाम, बुखार और गले की खराश को दुर करने के लिये काढ़ा बना कर पीना चाहिये।

बुखार तुलसी की पतियों गढ़ीयर, पिन या कमर के दर्द में लाभदायक है।

चाय में तुलसी के पत्ते को डाल कर पीने से स्वाद के साथ सेहत में भी लाभ होता है ।

इसका पौधा वातावरण को स्वच्छ करता है एवं प्राण वायु (O^2) की मात्रा अधिक करता है

में आशा करता हूं कि हर घर में तुलसी का पौधा होगा। अगर न हो तो अवश्य लगायें फिर उसका लाभ पता चलेगा।

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा

श्री गौतम आनन्द, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दी शब्द का सम्बन्ध शब्द सिन्धु से माना जाता है। 'सिन्धु' नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर हिन्दू, हिन्दी और फिर हिन्द हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द सम्पूर्ण भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द ईक) अर्थात हिन्दीक बना जिसका अर्थ है हिन्द का। यूनानी शब्द इन्दिका या अंग्रेजी शब्द इण्डिया आदि इस हिन्दीक के ही विकसित रूप हैं।

हिन्दी की विशेषताएँ एवं शक्ति

हिन्दी भाषा के उज्जवल स्वरुप का एहशास कराने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी गुणवत्ता, क्षमता, शिल्प-कौशल और सौंदर्य का सही-सही आकलन किया जाये।

१.संसार की उन्नत भाषाओं मैं हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है

२. यह सबसे अधिक सरल भाषा है

३ . यह सबसे अधिक लचीली भाषा है

४ . यह दुनिया की एक मात्र भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन है तथा

५ . यह सच्चे अर्थों में विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है।

६. हिंदी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है।

७ . हिंदी को शब्द संपदा एवं नविन शब्द रचना सामर्थ्य विरासत में मिली है। यह अनेक देशी भाषाओं एवं बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। एक हिसाब से अंग्रेजी के मूल शब्दों की संख्या लगभग १०,००० हैं जबकि हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या लगभग ढाई लाख से भी अधिक है।

८. हिन्दी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक है।

९ . हिंदी शाहित्य सभी दृष्टिकोण से समृद्ध है।

१० . हिंदी आम जनता से जुडी भाषा है तथा आम जनता हिंदी से जुडी हुई है।

११. भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम का अमूर्त –वाहन हिंदी भाषा ही है।

हिन्दी के विकास की सुरुवाती दिनों में पहले साधू-संत एवं धार्मिक नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उसके बाद हिन्दी पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम से बहुत मदद मिली; फिर बॉलीवुड की हिन्दी फिल्मों से सहायता मिली और अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टी वि चेंनेलो) के कारण हिन्दी समझने-बोलने वालों की संख्या में बेहताशा वृद्धि हुई है। हिन्दी में अनेक देशज शब्द का प्रयोग होता है। देशज का अर्थ है – 'जो देश में ही उपजा या बना हो' तथा जो न तो विदेशी हो और न किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना है। उदाहरण खटिया, लुटिया यह किसी प्रदेश के लोगो ने बना लिया और हिन्दी ने इसे अपना लिया। यह हिन्दी भाषा की खासियत है।

शुद्ध हिन्दी क्या है ? : इसके अलावा हिन्दी में कई शब्द अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि से भी आये हैं। इन्हें विदेशी शब्द कहते हैं। जिस हिन्दी में अरबी, फारसी, तुर्की तथा अंग्रेजी के शब्द लगभग पूरी तरह से हटा कर तत्सम शब्दों को ही प्रयोग में लाया जाता है, उसे 'शुद्ध हिन्दी' कहते हैं।

हमारा अभिमान है हिन्दी, भारत की शान है हिन्दी

हिन्दी हिन्दुस्तान की भाषा है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हिन्दी ने हिन्दुस्तान को विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी हिन्दुस्तान को बंधती है। कभी गांधीजी ने इसे जनमानस की भाषा कहा था तो कभी इसी हिन्दी की खड़ी बोली को आमीर खुसरो ने अपनी भावनाओ को प्रस्तुत करने का माध्यम भी बनाया। हिन्दी से हजारों लेखकों नें अपनी पहचान बनायीं तथा इसे अपना कर्मभूमि बनाया। हिन्दी को देश के संविधान में राजभषा की उपाधि इसके इन्हीं गुणों के कारण मिली।

महात्मा गांधी जी का सपना

जिस हिन्दी को संविधान में सिर्फ राजभाषा का दर्जा प्राप्त है उसे कभी गांधी जी ने खुद राष्ट्रभाषा बनाने की बात कही थी. सन १९१८ में हिन्दी शाहित्य सम्मलेन की अध्यक्षता करते हुए गांधी जी ने कहा था की हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। लेकिन आजादी के बाद ना गांधीजी रहे और ना उनका सपना। भाषा एवं जाति पर राजनीति करने वालों ने हिन्दी को कभी राष्ट्रभाषा नही बनने दिया। अमीर खुसरों ने हिन्दी को अपनी मातृभाषा कहा था। अमीर खुसरों के बाद हिन्दी का प्रसार मुगलों के साम्राज्य में ही हुआ।

भारतीय पुनर्जागरणन के समय

श्रीराजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और महर्षि दयानंद जैसे महान नेताओं ने हिन्दी की खड़ी बोली का महत्त्व समझते हुए इसका प्रसार किया और अपने अधिकतर कार्यों को इसी भाषामें पूरा किया। हिन्दी के लिए पिछली सदी कई दृष्टीयों से महत्वपूर्ण रहा है। इस सदी में हिन्दी गद्य का न केवल विकास हुआ, वरन भारतेंदु हरिश्चंद्र ने उसे मानक रूप प्रदान किया। वही महादेवी वर्मा , जयशंकर प्रसाद , सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत ने हिन्दी खड़ी बोली को और प्रसार दिया। इन सभी रचनाकारो का हिन्दी के विकास में बहुत बड़ा योगदान रहा।

आजादी की लड़ाई में हिन्दी

हिन्दी ने भारत के आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।देश के क्रांतिकारियों ने जनमानस से संपर्क साधने के लिए इसी हिन्दी भाषा का प्रयोग किया।

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा

१४ सितम्बर को एक बार फिर से सम्पूर्ण भारत में हिन्दी दिवस मनाया गया। इस द्वरान सरकारी, अर्द्धसरकारी तथा निजी संस्थाओ में कहीं हिन्दी सप्ताह तो कही हिन्दी पखवाड़ा मनाया जायेगा। सभी जगह जो कार्यक्रम आयोजित होंगे उसमें निबंध, कहानी तथा कविता लेकन के साथ ही वादविवाद प्रतियोगितायें तथा परिचर्चा आयोजित होंगी।

भारत में जब हर कागज पर हिन्दी लिखा जायेगा , तब जाकर कहीं हिन्दी पखवाड़ा और हिन्दीदिवस मनाने का लक्ष्य पूरा होगा।

जय हिन्द.....जय हिन्दी

'हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा'

सर्वेक्षण: एक सफ़र

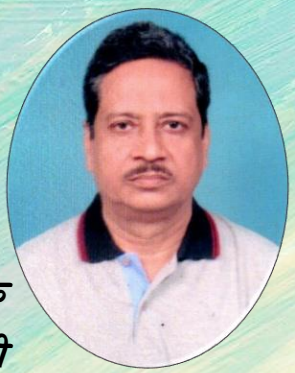

श्री रतन दे सरकार, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हाल ही में मैंने ज्वाइन किया 81 पार्टी, दूसरे ही हफ्ते आ गया फील्ड ड्यूटी का खत्त। बाहरी लोगों में कोई उस इलाके में फील्ड ड्यूटी करने का हिम्मत नहीं दिखाया। खुद के क्षमता के अनुसार मैंने एक सरल जगह फील्ड ड्यूटी के लिए चुन लिया।

हम तीन लोग हैदराबाद में ट्रेनिंग ख़त्म करके आए थे। नए जगह में बैचलर को कोई घर भाड़े में नहीं देना चाह रहा था। हम तीन ऑफिसर छुट्टी होने के बाद सारे खाली टेबल एक जगह करके ऑफिस के स्टोर से मिली कुछ पुराने रजाई बिछाकर बिस्तर तैयार के 29 खेलने में मग्न हो जाते थे। गिने चुने पांच कॉन्टिजेंट स्टाफ हमारे ऑफिस में रहते थे। रामू और रुद्रबहादुर उनमें से एक थे। रुद्र ने हमारे रात के खाने का जिम्मेदारी उठाया था, अंडा रोटी और कभी कभी भिंडी या बीन्स की सब्ज़ी खाने में कितना मजेदार था यह कहकर समझाया नहीं जा सकता। सब कुछ अच्छा ही चल रहा था। देखते ही देखते फील्ड ड्यूटी आ गया। कैप्टन साहब हम पांचों के फील्ड ऑफिसर बने। मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा था चुकी एक कैप्टन के सानिध्य में एक काफी बड़ा काम जो करना होगा। यहा बोलना चाहिए, 'मेरा एक दोस्त ऐयर मेन होकर पहला नौकरी करने जाता है उससे आर्मी डिसिप्लिन लाइफ की कहानी सुनकर मैंने भी सोचा था कि ऐयर मेन बनूंगा, मौका भी मिला था, लेकिन उससे पहले ही मुझे यह नौकरी मिल गई। कैप्टन साहिब मुझे उनकी जीप में ले जाने का निर्णय लिए। कैप्टन आर.पी. सर ने निर्देश दिया कि सुबह 6 बजे फील्ड यात्रा शुरू करना है। बड़े गाड़ी में 50 के लगभग तम्बू और त्रिपाल थे, पूरी गाड़ी भर चुकी थी। उसके ऊपर थे 20 एमटीपी। ऐसा लग रहा था मानो की कोई युद्ध में विजई होकर घर लौट रहे हो। बड़ी गाड़ी जिसमें सारे समान भरे थे वो हमारे तीन सर्वेयर को लेकर रवाना हो गई। हमरे पास यह निर्देश था कि हम कोलाशिब में मिलकर वहा खाना पीना ख़तम कर वापस रवाना होंगे। बड़े गाड़ी के निकलते ही हमरे जीप के यात्रा की तैयारी शुरू हो गई। जीप के पीछे लगी लंबी ट्रॉली में मेरे और आर.पी. सर के चीजों से भर गई। जीप के पिछले सीट पे दो एमटीएस थे। सुबह 6:30 को हमारी जीप रवाना हुई। साहा साहेब काफी समझदार आदमी और ड्राईवर थे। बाएं तरफ आर.पी. सर, मैं बीच में गियर के दोनों तरफ पांव रखकर बैठा था और दांयी तरफ साहा साहब बैठकर गाड़ी चला रहे थे। आर.पी. सर काफी मजाकिया मिजाज के इंसान थे। मुझे सतर्क करने के लक्ष्य से आर.पी. सर अपने आर्मी लाइफ से लेकर काफ़ी यादगार कहानी सुना रहे थे। कब जुवाई आ गया पता ही नहीं चला। कहानी के बीच साहा साहब ने हमें सतर्क किया। उनकी कहीं बात सुनकर हम घबरा गए थे। उनका कहना था कि यह अतंकवादी दहशत जगह है। इस इलाके मे अखाशि वासी सभी को निष्कासित किया गया था। बहुत सारे टूटे बिखरे घर और आग में जली राख के बीच से हमारी जीप चल रही थी। कुछ ही देर में हमारी जीप एक छोटी बस्ती के बीचसे चलने लगी। आरे-टेढे रास्ते में सतर्कता के साथ साहा साहब ने जीप चलाना शुरू किया। 4 से 5 छोटे लड़को की टोली एक टूटे दीवाल पर बैठकर सिगरेट पी रहे थे। हमारी जीप उनकी तरफ बढ़ती

देख वह जोर जोर से चीखने लगे। उनकी भाषा समझ पाना हमारे लिए मुश्किल था। यह देख साहा साहब ने जीप की गति बढ़ा दी। इतने ही देर में तीव्र गति से ३ जलती सिगरेट मेरे शरीर के उपर आ गिरी। आर.पी. सर तेज़ी से जलती सिगरेटो को लेकर बाहर फेक देते है। यह सारी घटनाएं इतनी जल्दी हुई की मुझे कुछ समझने का मौका तक न मिल पाया उतने डर में हमारी गाड़ी उनसे पीछा छुडाकर काफी दूर पहुंच चुकी थी। फिर भी उन्होंने पीछा नहीं छोड़ा उनमें से कुछ लोग हाथ में ईटा एवं पत्थर लेकर पीछा कर रहे थे। आखिर में हम उन सबसे पीछा छुड़ाकर काफी दूर पहुंच चुके थे। तभी मुझे उस दिन की बात याद आती, "हैदराबाद से ट्रेनिंग ख़तम कर में गुवाहाटी पहुंचा। वहा मालूम चला सुबह से मेघालय बन्द है। एक मेघालय ट्रांसपोर्ट के बस की टिकट मिल रही थी। मैं मां काली का नाम लेकर बस में चढ़ गया। मै काफी चिंतित था कि शिलोंग ऑफिस में पहले दिन रिपोर्ट कर पाऊंगा या नहीं। अचानक तेज़ी से एक ईंट मेरे बगल वाली खिड़की में आ गिरा। काफी सारे कांच के टुकड़ों से मैं डर गया। ड्राईवर के हाथ से भी खून बह रहा था। मै ड्राईवर के ठीक पिछली सीट पर बैठा था। कोई शायद छुपकर ड्राईवर के तरफ निशाना किया था। यह जीपदाओ को पार कर हम बस स्टैंड पहुंचे। वहां ड्राईवर मेरे शरीर की सारे कांच के टुकड़ों को सावधानी पूर्वक निकाल दिया। इस यात्रा में मुझे कुछ ज्यादा चोट नहीं लगी थी। परन्तु 4-5 दिनों तक हाथ के जख्म जगह से कांच के छोटे-छोटे टुकड़े निकल रहे थे"। पुराने घटनाओं को याद करने के बीच आर.पी. सर की डांट सुनकर मै वापस होश में आया। वह मुझे सावधान कर रहे थे यह कहते हुए कि और थोड़े में ही जीप में आग लग जाती। मैने उनकी बात सुनते हुए उनसे माफ़ी मांगी। आर.पी. सर पीठ थप थपा दिए। इसके बाद जीप चाय बिस्कुट खाने चन्द जगह रुकी। शाम 5:30 बजे हम सिलचर पहुंचे। ऑफिस सिलचर शिफ्ट होगी इसलिए एक घर भाड़े पर लिया गया था। आर.पी. सर निश्चित किए आज यही नाइट हाल्ट होगा। हमारे वाले गाड़ी के साथ हमारा कोई संपर्क संभव नहीं था। वह मिजोरम के रास्ते चल रहे थे। दूसरे दिन हमारी जीप सुबह 6:30 बजे रवाना हुई। आर.पी. सर ने याद दिलाते हुए कहा," याद है ना हमारी दूसरी गाड़ी कलासिब में हमारे लिए इंतजार करेगी। हम दोपहर से पहले ही उनके पास पहुंच सकते है"। मिजोरम बॉर्डर पहुंचने में हमें ज्यादा देर नहीं लगी। अचानक हमारी जीप 100 गाड़ियों के पीछे आ खड़ी हुई। साहा साहब ने कहा, "यहां गाड़ी पास करने से पहले काफ़ी तलाशी होती है"। काफ़ी देर लग गई हमें गेट तक पहुंचने में। गेट में पहुंचते वहां काफ़ी सुंदर वेश धारी पुलिस कर्मी सर्च कर रहे थे। देख कर यह लग रहा था कि हम दुसरे देश में आ पहुंचे है। आर.पी. सर ने अपना आइडेंटिटी कार्ड दिखाया। फिर उन पुलिस ऑफिसरो ने उन्हें सम्मान के साथ सैल्यूट करते हुए जीप को आगे बढ़ने की अनुमति दी। देखकर मै अत्यंत गर्वित हो उठा। हमारा सफर एक मुलायम रास्ते पर जारी रही। साहा साहब कुछ समय के लिए जीप रोके जीप की इंजन काफ़ी गर्म हो गई थी। मैं भी राह देख रहा था कि कब जीप रुके और कब मैं तो चल पाऊ। दोनों तरफ घना हरा जंगल। सिर्फ बाएं तरफ बर्मा देश की सीमा दिख रही थी। काफ़ी समय से हम वहा रुके थे। अब गाड़ी का इंजन ठंढा हुआ। साहा साहब गाड़ी स्टार्ट किए। कोलासिब अब कुछ ज्यादा दूर नहीं था। उतराई पहाड़ में जीप की इंजन कुछ अजीब आवाजे करनी शुरु किया। साहा साहब बार बार गियर बदल रहे थे। धीरे धीरे गारी धीमी होने शुरू हुई। हम सब परेशान हो उठे। शाहा साहब गाड़ी रोककर बोले कि गहर में गड़बड़ हुआ है। इस मानवविहीन इलाके में हमारा क्या होगा। थोड़ी देर इंतजार करने के उपरांत हमारे विपरीत दिशा से हमें एक ट्रक आती दिखी। साहा साहब बेबस होकर रास्ते के बीच जा खरे हुए। दोनों हाथ हिलाकर इशारा करते हुए उन्होंने ट्रक को रोका। हमें बेबस देख वह ट्रक ड्राइवर उतरा एवं हमारे जीप की इंजन कि जांच करके कहा कि एक माएकर बुलाना पड़ेगा और भरोसा दिलाया कि 5 किमी

ऊपर एक रोड साइड मारकर का दुकान है। उनको बुलाकर लाने से हमारा गाड़ी ठीक हो जाएगा। कुछ ही देर में एक खाली ट्रॉली मेरे तरफ़ आयी। ट्रक ड्राइवर हमारे गाड़ी को लेकर जाने के लिए अनुरोध किया। आर.पी. सर ने कहा कि वो उन्हें 500 रुपए देंगे। आखिकार उपाए हुआ। हम सब जीप में और कुछ लोग खाली ट्रॉली मै बैठे। ट्रॉली के खींचाव से गारी धीरे धीरे आगे बढ रही थी। हम ट्रक ड्राइवर को बहुत धन्यवाद देते हुए रवाना हुए। मारकर के पास पहुंचने के उपरांत उन्होंने गाड़ी ठीक कर दी। एक बार फिर हमारी गाड़ी चल पड़ी। हम सब बेचैन होकर बैठे थे कि कब हम बड़े ट्रक को देख सकेंगे। काफ़ी देर बाद रास्ते के पास से काफ़ी सारे छोटे छोटे घर दिखे। अब लग रहा था कि सच में हम कोलासीब पहुंच चुके। बहुत जल्द हमें एक रोड साइड होटल मिला। सूरज पश्चिम की तरफ डूब रहा था। अब समझ आया कि भूख लगी है। आर. पी. सर खुद ही होटल में रुकने का निर्देश दिए। खाने में उबला अंडा लई पत्ता का सब्जी और ठंडा चावल मिला था। हमने एक एक प्लेट खा लिया। आर.पी. सर साहा साहब को पुछते है कि इज़ोल पहुंचने में और कितना देर लगेगा। साहा साहब बोले और ३ घंटे का रास्ता बाकी है। अब याद आया की हमने अब बड़े ट्रक का पता कैसे चलेगा। होटल बॉय ने कहा कि एक सर्कस पार्टी की गाड़ी सुबह इसी होटल में रुके खाना खाई थी। गाड़ी में बड़े तम्बू थे तब समझ अता है कि वह हमारी ही बड़ी गाड़ी थी। पहाड़ के रास्ते जीप आगे बढ़ रही थी। दोनों तरफ़ पहाड़ के ढाल थे। देखते देखते सूरज अपनी चमक लेकर पहाड़ के पीछे छुपी जा रही थी। 6 बजे चंद्रमा की हल्के किरण से पूर्वी आकाश स्निग्ध हो उठा था। साहा साहब बोले कि अभी और एक घंटा का यात्रा बाकी है। दक्षिण आसमान में छोटे छोटे तारे दिखाई दी रही थी। साहा साहब उंगली से इशारा करते हुए कहते है," वो देखिए इजोल कितना सुंदर लग रहा है"। तृप्त नयन से उसी दृष्य को देखे जा रहा था। गाड़ी में अब 7 बज चुके हैं। आर.पी. सर इतनी देर बहुत शांत बैठेकर बाहरी दृष्य का उपभोग कर रहे थे। अचानक मुझे इशारा कर बाए तरफ़ नीचे पहाड़ के तरफ़ देखने बोले। वो कहते है,"सरकार देखो पहाड़ के नीचे यह लेक कितनी सुंदर लग रही है"। कुछ समय मै भी उसी ओर देख रहा था। सही में वह काफ़ी सुंदर लेक के उपरी हिस्से की तरह दिख रही थी। दुसरे ही क्षण मुझे अहसास हुआ की वहां लेक होना संभव नहीं है। इतना पानी कहां से आएगा। मैंने तभी सर को कहा वह लेक नहीं हो सकता बल्कि एक गुच्छा बवाल वहां रुकी हुई है। सर ने विश्वास नहीं किया और कहा 500 रुपए की बाजी हो जाए। वापसी के रास्ते पता चल जाएगा। मै भी राजी हो गया। यह कह दू की सिर बात बात पे बाजी रखते थे। एक 6 माह के फील्ड ड्यूटी में मैंने सर को तीन बार 500 रुपए के बाजी जीत कर उन्हें हराया है लेकिन एक बार भी नहीं मिला। सर शायद एसा ही करके सांत्वना देते हैं।

जारी...

******

श्री अध्ययन सरकार, सुपुत्र: श्री सुजीत सरकार
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

श्री अध्ययन सरकार,
सुपुत्र: श्री सुजीत सरकार
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

WATER IS PRECIOUS. WATER IS LIFE.
PLEASE DON'T WASTE A SINGLE DROP OF WATER
SHUCHI DAS, 32-2A

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

हरियाली ही जीवन है

शुचि दास (2A) Roll-32-A

सुश्री अस्मिता मित्रा

सुपुत्री : श्री तापस मित्रा, प्रवर श्रेणी लिपिक

बोलते अक्षर

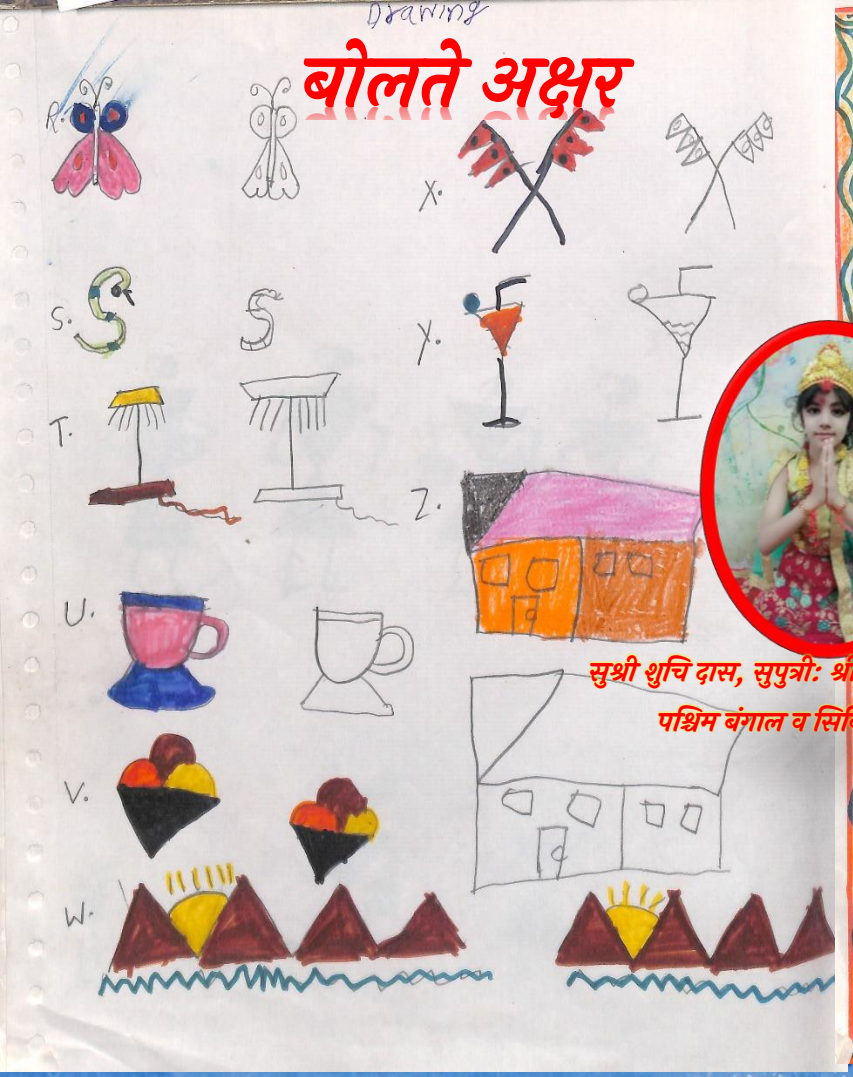

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री: श्री शुभंश कुमार

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

मिथिला पेंटिंग

श्री रेबांता मुखर्जी , सुपुत्र: श्रीमती शम्पा मुखर्जी

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

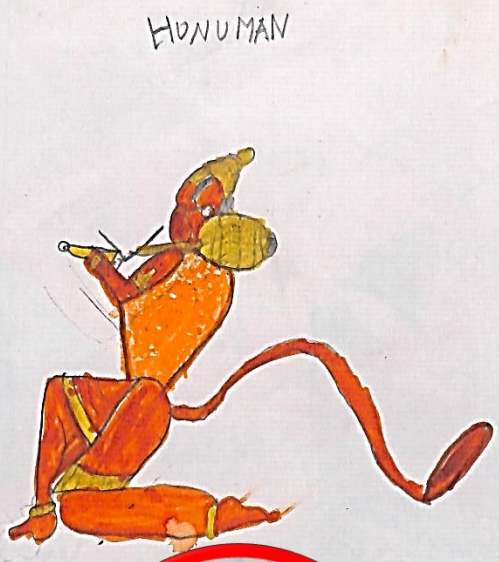

बोलते चित्र

सुश्री शुचि दास, सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार
पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

धरती माँ को सबसे प्यारा।
हरा भरा ये उपवन सारा ॥
वन उपवन गुलजार बनाओ।
मुफ्त में सब ऑक्सीजन पाओ ॥
शुचि दास Roll no. 32

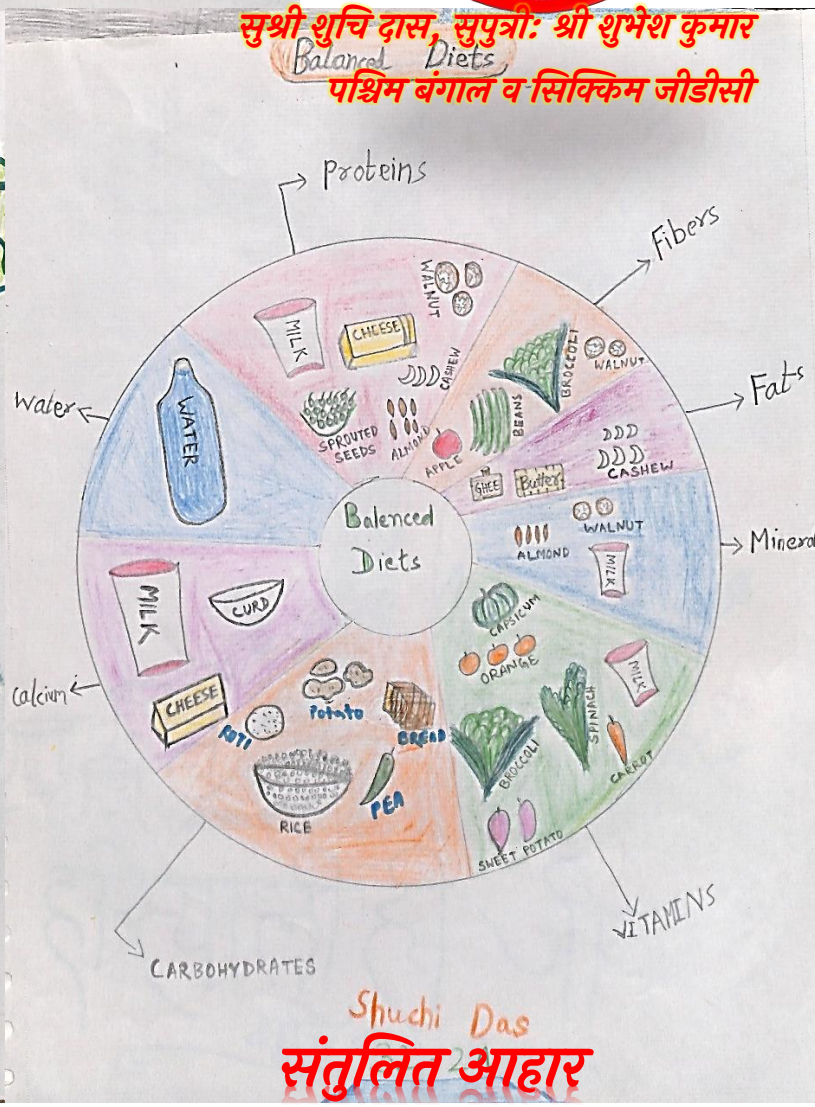

संतुलित आहार

सुश्री स्निग्धा बिश्वास, भांजी: श्रीमती रीना पाल

पश्चिम बंगाल व सिक्किम जीडीसी

श्री अध्ययन सरकार
सुपुत्रः श्री सुजीत सरकार, पूर्वी क्षेत्र कार्यालय

জীব আজ অনুজীবের কাছে পরাজিতে